# प्रथम अध्याय

## 1.1 सूर्यबाला का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:

साहित्य समाज का दर्पण होता है जिसमें समाज में घटित होने वाली सारी घटनाएँ हम प्रतिबिम्ब स्वरूप देख सकते हैं। साहित्य का समाज से और समाज का साहित्य से एक अटूट बंधन है।साहित्य को समाज से और समाज को साहित्य से जोड़ने का कार्य जो करता है वह एक साहित्यकार होता है जो एक सेतु की तरह कार्य करता है। एक उत्कृष्ट साहित्यकार अपने समय का कलम का सिपाही होता है जिसकी प्रखर दृष्टि समाज पर पड़ती है और वह उस दृश्य का परिस्थिति का अपने शब्दों में डाल कर अपने साहित्य में उजागर करता हैं।सूर्यबाला एक प्रतिभा संपन्न उपन्यासकार व्यंग्यकार कहानीकार एवं बाल साहित्यकार के रूप में देश विदेश में ख्याति प्राप्त कर चुकी है उनका व्यक्तित्व साहित्य जगत में ख्यातनाम है उनके व्यक्तित्व की छाप उनके साहित्य में हम देख सकते हैं प्रस्तुत प्रथम अध्याय में हम उनके व्यक्तित्व का अध्ययन करेंगे।

## 1.2 सूर्यबाला का व्यक्तित्व:

सूर्यबालाजी के विषय में मेरी चर्चा मेरी शोध मार्गदर्शिका प्रो.लता सुमंत जी के साथ हुई थी उन्होंने मुझे सूर्यबाला जी द्वारा रचित साहित्य का अध्ययन करने का प्रथम सुझाव दिया था। मैंने इस दौरान सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास एवं कहानियों का अध्ययन प्रारंभ किया उनकी कहानियों एवं उपन्यासों का मेरे मन पर गहरा असर हुआ जिससे मैंने उनसे टेलिफोनिक बात की उनकी भाषा आवाज ने ही मुझे अधिक प्रभावित किया। उन्होंने मुझे मेरे शोध कार्य को लेकर आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया और मेरे इस संकल्प की प्रशंसा की। आज भी मैं उनके और मेरे बीच हुआ वह प्रथम संवाद भूली नहीं हूँ। उनकी आवाज में मृदुता, संवेदनशीलता एवं शालीनता का मुझे आभास हुआ। सूर्यबाला हिंदी की

समकालीन साहित्य की प्रसिद्ध उपन्यासकार कहानीकार व्यंग्यकार एवं बाल साहित्यकार के रूप में जानी जाती है समकालीन साहित्य में सूर्यबाला का लेखन एक विशिष्ट महत्त्व रखता है ऐसी सृजनशील संवेदनशील प्रतिभा संपन्न उभरती हुई प्रसिद्ध लेखिका सूर्यबाला का जन्म विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल देवभूमि वाराणसी की पावन धरती पर 25 अक्टूबर 1943 में हुआ था उनका पूरा नाम सूर्यबाला वीर प्रताप सिंह श्रीवास्तव है उनकी माता का नाम स्वर्गीय श्रीमती केशर कुमारी हैं उनके पिता ने उनकी परवरिश बहुत लाड प्यार से की थी उनके पिता द्वारा दिए गए संस्कार उनके साहित्य में दृष्टिगत होते हैं उनके घर में शुरू से ही कला संगीत पढ़ने लिखने का वातावरण हमेशा बना रहता था उनके घर में हमेशा हारमोनियम, ग्रामोफोन की धुन सुनाई देती थी सूर्यबाला को जन्म स्थल वाराणसी से विशेष लगाव है जो उनके द्वारा रचित साहित्यिक कृतियों में हम वहाँ के परिवेश के रूप में देख सकते हैं।

सूर्यबाला के पिताजी शिक्षा विभाग में उच्च कक्षा के अधिकारी थे। उनके शिक्षा विभाग में विभिन्न कक्षाओं के पाठ्य पुस्तकों का मेला लगा रहता था उन्हीं पुस्तकों को देखकर सूर्यबाला को उन्हें पढ़ने की रुचि उत्पन्न हुई। सूर्यबाला के घर में विभिन्न पुस्तकें मिलती थी जैसे 'श्री सुबोधिनी', 'उर्दू की रामायण', 'सुदामा चरित्र', 'रॉबिंसन क्रूसो', 'शेक्सपियर', 'मिल्टन', 'रामतीर्थ ग्रंथावली' और 'चंद्रकांता संतति' । उनके माता-पिता दोनों ही सुशिक्षित थे । उन्हें अंग्रेजी, हिंदी एवं उर्दू भाषाओं का ज्ञान था। वह अनुशासन प्रिय परंपरा संस्कृति का आदर करने वाले और भगवान में अटूट आस्था रखने वाले थे उनके सान्निध्य और छत्रछाया में सूर्यबाला का बचपन अत्यंत लाड प्यार से गुजरा और अपने माता-पिता द्वारा दिए गए विचार संस्कार हमें उनके साहित्य में दृष्टिगत होते हैं।सूर्यबाला कि उनके अलावा और तीन बहने हैं जिनके नाम वीर बाला, चंद्र बाला, और केशर बाला तथा भाई विष्णु प्रताप सिंह। सूर्यबाला के पिता का देहांत उनके बचपन में ही हो गया था जिसके कारण पाँच बच्चों की सारी जिम्मेदारियाँ उनकी माता पर आ गई

थीं । उनके पिता के अकाल मृत्यु के कारण उनकी माँ ने विषम आर्थिक परिस्थिति में भी हौसला बनाए रखा और अपने पाँचों बच्चों की परवरिश में किसी बात की कमी नहीं आने दी। विषम परिस्थितियों से लड़कर सूर्यबाला की माता के केसर कुमारी ने बखूबी अपनी सारी जिम्मेदारियों को एक योद्धा की तरह पूरा किया परंतु कभी भी अपने स्वाभिमान पर आंच ना आने दी क्योंकि हम जानते हैं कि अल्प आयु में विधवा होने से किन-किन सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों का सामना उन्हें करना पड़ा होगा परंतु जीवन से हार ना मानते हुए भी उन्होंने अपने पांचों बच्चों की परवरिश में कोई कमी नहीं आने दी और उसी गुन का प्रभाव हम सूर्यबाला में देख सकते हैं।सूर्यबाला पर उनकी माता का बड़ा प्रभाव देखने को मिलता है जैसे विसंगतियों से विपरीत परिस्थितियों में कैसे संतुलन बनाए रखना माता द्वारा दिए गए संस्कार उन्हें विरासत में प्राप्त हुए हैं।

### 1.2.1 सूर्यबाला का बहिरंग:

सूर्यबाला के व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण है उन्हें देखने मात्र से उनकी छवि आँखों में बस जाती है। वह भारतीय नारीत्व का विशेष उदाहरण प्रस्तुत करती है। उनसे मेरी मुलाकात प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं हो पाई है परंतु सोशल मीडिया के माध्यम से उनकी तस्वीरों को निहारते हुए उनके बहिरंग व्यक्तित्व का यहाँ पर परिचय दे रही हूँ। उनकी कद काठी औसत है। उनके माथे पर भारतीय नारी के श्रृंगार स्वरूप बड़ी बिंदी को अपने कपोल पर सजाती है। गोरा रंग एवं लंबा चेहरा प्रथम दृष्टि में ही आप को मोहित कर लेने वाला है। सरल एवं सहज साड़ी के साथ सँवारे हुए बाल, उनकी आंखों में उनके सृजनशीलता का रंग साफ झलकता है।

### 1.2.2 सूर्यबाला का अंतरंग:

सूर्यबाला का बहिरंग व्यक्तित्व आपको उनकी ओर आकर्षित करता है उतना ही उनका आंतरिक व्यक्तित्व चुंबकत्व गुण धारण किए हुए हैं। फोन से जब मेरी उनसे बात होती है तो मुझे उनके अंतरंग व्यक्तित्व का परिचय हो जाता

है। उनकी मधुर कोमल आवाज सरल एवं सहज स्वभाव मुक्त रूप से चर्चा विचारणा  करने वाली अपने भाव को मुक्त रूप से प्रकट करती हुई संवेदनशीलता के साथ-साथ प्रसन्न चित्त व्यक्तित्व लिए हुए वह हमें उनकी और सहज आकर्षित कर लेती है। उनके यही भाव उनके साहित्य की रचनाओं में हमें दिखाई देते हैं।

**1.2.3 सूर्यबाला की शिक्षा**:

सूर्यबाला के पिताजी एक सरकारी अधिकारी होने के कारण उनकी हर साल बदली होती रहती थी जिसके कारण सूर्यबाला को पाँचवीं कक्षा तक पाठशाला नहीं भेजा गया उनके पिता हर साल बदली की वजह से सूर्यबाला के मन पर क्या असर होगा यह सोचकर अपनी मर्जी उन पर थोपना नहीं चाहते थे सूर्यबाला ने अपने शब्दों में ही कहती है "बनारस के आर्य स्कूल में मेरा नाम छठवीं कक्षा में दाखिल करवाया गया तब पूरी तरह से अपनी मर्जी से मैं घर में चारों तरफ बिखरी उन तमाम रंग -बिरंगी  नई नकोर  पुस्तकों को भी पढ़ पचा चुकी थी। जो मेरे शिक्षा विभाग के अधिकारी पिता के पास पहली से आठवीं तक के पाठ्यक्रम में स्वीकृत होने के लिए आया करती थी।"[1] वर्ष 1943 में वाराणसी में जन्मी सूर्यबाला ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी साहित्य में उच्च शिक्षा प्राप्त की थी उनका शोध प्रबंध 'रीति साहित्य' पर आधारित विषय था जो उन्होंने वाराणसी के हिंदू विश्वविद्यालय से डॉक्टर बच्चन सिंह के मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

**1.2.4 पारिवारिक जीवन शैली :**

सूर्यबाला का शुभ विवाह श्री ए.के. लाल के साथ हुआ। उनके जीवन साथी भी उन्हीं की तरह सुसंस्कृत, सुशिक्षित हैं।उन्होंने अपना कार्यभार मर्चेंट नेवी में चीफ इंजीनियर के पद पर संभाला था परंतु किसी कारणवश उन्होंने वह नौकरी त्याग दी और उसके पश्चात उन्होंने अनेकों उच्च पदों पर कार्यभार संभाला और अब वह सेवानिवृत्त अधिकारी है सूर्यबाला के परिवार में उनकी एक बेटी और दो पुत्रों

का समावेश होता है। उनके दोनों ही बेटे इंजीनियर हैं। एक का नाम अभिलाष और दूसरे का नाम अनुराग है। बेटी साइंटिस्ट है जो मुंबई में ही कार्यरत हैं । उनका नाम दिव्या है। सूर्यबाला का पारिवारिक जीवन खुशहाली में बीत रहा है।

### 1.2.5 सूर्यबाला का कार्यक्षेत्र:

सूर्यबाला ने अपना कार्य आर्य महिला विद्यालय से प्रारंभ किया था सूर्यबाला की प्रथम कहानी सन 1972 में 'सारिका' में प्रकाशित हुई।सन 1975 में मुंबई आने के बाद लेखन में विशेष प्रगति की। सूर्यबाला का सन 1975 में प्रकाशित प्रथम उपन्यास मेरे 'संधिपत्र' विशेष रूप से काफी चर्चा में रहा था।वाराणसी में व्याख्याता के पद पर भी वह कार्यरत रह चुकी हैं। डॉ सूर्यबाला ने अब तक 150 से भी अधिक कहानियों ,उपन्यासों, हास्य-व्यंग्य, एवं बाल रचनाओं का लेखन कर चुकी है। इनमें से अधिकांश हिंदी की प्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। अनेकों आकाशवाणी दूरदर्शन पर प्रसारित हुए हैं।देश-विदेश में रेडियो व टीवी चैनलों से उन्होंने अपनी रचनाओं का पठन किया है और अनेकों रचनाओं का समावेश कक्षा-8 से लेकर स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर तक के पाठ्यक्रमों में शामिल हुआ है। समकालीन कथा साहित्य में सूर्यबाला का लेखन अपनी विशिष्ट भूमिका एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

### 1.2.6 सूर्यबाला का साहित्य सृजन का उद्देश्य:

साहित्य सृजन में प्रेरणा स्त्रोत के रूप में किसी भी लेखक रचनाकार के लिए उसके परिवार ,युगीन वातावरण, उसकी शिक्षा साहित्य सृजन में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होते हैं। सूर्यबाला का कहना है कि "कोई भी लेखक किसी एक वस्तु या घटना से प्रभावित होकर कुछ प्राप्त नहीं करता उसकी रूचि बचपन से ही विकसित हो जाती है।"[2] सूर्यबाला ने अपनी छठी कक्षा में ही लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया था। उनके आसपास घटित होने वाली घटनाओं परिस्थितियों से ही उन्हें अपने बाल्यकाल में प्रेरणा प्राप्त होती रहती थी क्योंकि उनके घर में

हमेशा से ही पाठ्य पुस्तकों का ढेर लगा रहता था। उनके पिताजी शेरो शायरी के शौकीन थे।माता साहित्यिक एवं कला में हमेशा अपना प्रेम व्यक्त करती रहती थी साथ ही उनकी बहन वीरबाला ने उन्हें साहित्यकार बनने के लिए प्रथम प्रेरणा प्रदान की। उनकी बहन के द्वारा हमेशा सूर्यबाला को प्रेमचंद और सुदर्शन की कहानियाँ सुनाई जाती थी जिस वजह से सूर्यबाला का साहित्य के प्रति लगाव दिन-ब-दिन बढ़ता रहा सूर्यबाला द्वारा रचित प्रथम कहानी 'जीजी' सन 1972 में 'सारिका' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। सूर्यबाला के साहित्य को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि उनके माता- पिता, बहन का बहुत बड़ा योगदान उनके साहित्यिक जीवन में रहा है। उनको बचपन से ही साहित्य सर्जन करने के लिए प्रेरणा स्त्रोत का कार्य उनके परिवारिक सदस्य करते रहें क्योंकि साहित्य सृजन करना कोई एक दिन का काम नहीं है। उसका बीज तो सूर्यबाला के परिवार के सदस्यों ने बचपन में ही बो दिया था। जिसके कारण ही हमें समकालीन साहित्य की इतनी प्रखर,यथार्थवादी, प्रेरणास्त्रोत लेखिका प्राप्त हुई।

**1.2.7 सूर्यबाला की भ्रमण वृत्ति :**

सूर्यबाला को बचपन से ही प्रवास करने की आदत थी क्योंकि उनके पिताजी एक सरकारी अधिकारी होने के कारण उन्हें एक शहर से दूसरे शहर तबादला होने के कारण जाना पड़ता था।यात्रा करने के उनके इसी शौक के चलते सूर्यबाला नए-नए स्थलों की मुलाकात लेती रहती थी। जिसके कारण उनके साहित्यिक रचनाओं में उसी प्रकार का मनमोहक एवं जीवंत वातावरण दृष्टिगत होता है।सूर्यबाला अपने पति के साथ कई विदेश यात्राएं कर चुकी हैं इसी कारण हमें उनकी व्यंग्य रचनाओं में कई रचनाएँ यात्राओं पर आधारित प्राप्त होती है।

सूर्यबाला को प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कार:

(1) 'कात्यायनी संवाद' के लिए घनश्याम दास सराफ पुरस्कार।

(2) सन 1996 में 'प्रियदर्शनी' पुरस्कार।

(3)' नागरी प्रचारिणी' सभा काशी सम्मान।

(4) 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा' ने हिंदी भाषा के साहित्य में सेवा के लिए सम्मान प्रदान किया।

(5) 'आरोही' संस्था के द्वारा 'मुंबई विश्वविद्यालय' सम्मान।

(6) 'राष्ट्रीय कायस्थ सभा' साहित्यिक योगदान सम्मान।

(7) वरिष्ठ पत्रकार एवं नवनीत के संपादक श्री विश्वनाथ सचदेव ने 2008 को गोइंका पुरस्कार से सूर्यबाला को सम्मानित किया।

सूर्यबाला का कृतित्व :

सूर्यबाला का साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण 6 वर्ष की अल्पायु में ही हो गया था। सूर्यबाला ने अपने आसपास की घटनाओं का उनके संपर्क में आने वाले लोगों ने एवं उनके परिवार ने उन्हें लेखन कार्य के लिए प्रेरित और उत्साहित किया था। आजादी के बाद महिला साहित्यकारों ने जो साहित्य में पदार्पण किया वह एक मिसाल बन गया था धीरे-धीरे ही सही सूर्यबाला ने हिंदी साहित्य में अपनी जड़ मजबूत कर ली है।अब वह साहित्य जगत में एक प्रसिद्ध एवं संतुलित लेखिकाओं में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है।उनकी बहन वीरबाला ने उन्हें साहित्य लेखन के लिए सबसे अधिक प्रोत्साहित और प्रेरित किया सूर्यबाला ने समाज के यथार्थ सच्चाई को अपने अनोखे अंदाज में प्रस्तुत किया है। धर्मयुग पत्रिका में सन 1973 में उनकी प्रथम व्यंग्य रचना 'अविभाज्य' का प्रकाशन हुआ था। व्यंग्य साहित्य के अलावा सूर्यबाला ने बाल साहित्य में भी अपनी लेखनी का जादू चलाया है 'झगड़ा निपटा कर दफ्तर' एक बाल सुलभ संग्रह है जिसमें बच्चों को पसंद आए ऐसी बाल सुलभ रचनाओं का संग्रह किया गया है।

### 1.2.8 सूर्यबाला का उपन्यास साहित्य:

सूर्यबाला को साहित्य जगत में उनके उपन्यास 'यामिनी कथा' एवं 'मेरे संधिपत्र' से पहचान प्राप्त हुई ।सूर्यबाला ने कुल मिलाकर 5 उपन्यास लिखें हैं।

जो अनुक्रम में इस प्रकार है प्रथम 'मेरे संधिपत्र', द्वितीय 'सुबह के इंतजार तक', तृतीय 'अग्निपंखी', चतुर्थ 'दीक्षांत' और पाँचवां 'यामिनी कथा' और यात्रा वृतांत पर अभी-अभी उनका एक नया उपन्यास प्रकाशित हुआ है जिसका नाम है 'कौन देश को वासी' । इस उपन्यास को मैंने अपने शोध-प्रबंध में शामिल नहीं किया है। परंतु हम उनके 5 उपन्यासों का संक्षिप्त परिचय सूर्यबाला के कृतित्व के रूप में प्राप्त करेंगे।

### 1.2.8.1 मेरे संधिपत्र:

'धर्मयुग' में धारावाहिक प्रकाशित होने के कारण यह उपन्यास पाठकों में काफी लोकप्रियता प्राप्त कर चुका था। इस उपन्यास का प्रकाशन 1977 में हुआ था। उस समय साहित्य के क्षेत्र में सूर्यबाला एक नई लेखिका के रूप में उभर रही थी। सूर्यबाला एक नई लेखिका होने के कारण पुस्तककार के रूप में ही प्रतिष्ठित प्रकाशक ने प्रकाशित किया था।इस उपन्यास की खास बात यह थी कि इस उपन्यास का प्रथम संस्करण दो ढाई साल में ही बिक गया था। जिसकी अपेक्षा ना ही प्रकाशक को थी ना ही लेखिका को  इसकी कोई उम्मीद थी। मेरे संधिपत्र का मुख्य पात्र शिवा है उसका विवाह साधन संपन्न परिवार के विद्युत रायजादा के साथ हुआ था। इस उपन्यास में सूर्यबाला ने शिवा के त्याग समर्पण की भावना को केंद्र स्थान में दर्शाया है।उच्च परिवार में उसे तीन बेटियाँ पहले से ही माँ बुलाने वाली थी। शिवा को अपने जीवन के साथ कदम-कदम पर बहुत सारे समझौते करने पड़े। शिवा की जिंदगी का अकेलापन दूर करने का प्रयास उसकी तीनों बेटियों रिंकी ,रुचा और रत्ना करती थी। सूर्यबाला ने इस उपन्यास में पति-पत्नि के बीच के संबंधों को लेकर निर्माण होने वाली प्रश्नों को उजागर किया है। दांपत्य जीवन का आधार ही परस्पर प्रेम पति पत्नि की सोच विचार समझदारी आदि कई ऐसे पहलू होते हैं जो दांपत्य जीवन को सुखमय बनाते हैं। परंतु आधुनिक काल में आते-आते यह सारी विचारधारा बदल गई।इसी विचारधारा को सूर्यबाला ने नई

पीढ़ी के माध्यम से उजागर करने का प्रयत्न किया है ।इस उपन्यास में शिवा का जीवन एक संधिपत्र जैसा है।वह पग-पग पर अपने जीवन के साथ समझौते करती रहती हैं।अपने पति की मृत्यु के पश्चात भी वह दूसरा विवाह नहीं करती अपनी तीनों बेटियों की जिम्मेदारियों को जैसे शादी करवा कर पूर्ण कर देती है।उसके बाद उसके जीवन में रत्नेश आता है वह अपने आप को रत्नेश को सौंप देती है परंतु रत्नेश से विवाह नहीं करती और अपनी कोठरी में एकलता भरा जीवन व्यतीत करती है।मेरे संधिपत्र के विषय में डॉक्टर सरिता कुमार अपने विचार प्रकट करते हुए कहती हैं " 'मेरे संधि पत्र' उपन्यास का अंत विचित्र रूप में किया गया है पति घर से बाहर चला जाता है और पत्नी ममता के बंधनों को तोड़कर अकेली खड़ी रह जाती हैं।"[3]

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने शिवा के रूप में नारी के जीवन के एक सच्चे पहलू को सामने रखा है। शिवा आज के नारी की मनोदशा का जीवंत उदाहरण है जो अपने जीवन के साथ संधि के रूप में हमेशा समझौते करती रहती है और यही उसके जीवन का अटल अटूट सत्य है जिसे उसने और समाज दोनों ने स्वीकार किया है।

### 1.2.8.2 सुबह के इंतजार तक:

सूर्यबाला द्वारा रचित यह उपन्यास 1980 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में बलात्कार पीड़ित लड़की की संघर्षमय जीवन से गुजरते हुए अपने जीवन को फिर भी कैसे लड़ते हुए प्रेरणादायक बनाती है इसकी एक संकल्पना सूर्यबाला ने प्रस्तुत की है। एक पल में ही कैसे मानू की जिंदगी तहस-नहस हो जाती है। परंतु अपने अदम्य साहस स्वालंबन और शिक्षा के प्रति उसके असीम प्रेम और उसके अथक परिश्रम के माध्यम से वह अपना मकाम प्राप्त कर ही लेती है।

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने एक मध्यमवर्गीय परिवार की समस्याओं के माध्यम से समाज के कई अनछुए पक्षों को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

मानू जब मामा मामी के साथ शहर रहने के लिए जाती है तब उसके साथ बलात्कार की घटना घटित होती है। बलात्कार एक ऐसी घटना है जो एक नारी के जीवन को तहस-नहस करके उसके शरीर के साथ-साथ उसके आत्मा को भी पीड़ा पहुंचाता है। इस समस्या के चलते मानू अपने माँ-बाप का भी परित्याग करके अपने छोटे भाई को काम कर के आखिर में उसे डॉक्टर बना देती है। परंतु स्वयं बलात्कार के कारण शादी नहीं करने का फैसला करती है ।ऐसे जीवन को स्वीकार कर लेती है ''जिंदगी में जो कुछ मुझे बलात् बिना, अपराध सौंपा गया है, उसे जीवन के साथ झेलते हुए समाज के बीच जिऊंगी।" "मैं सारी उम्र चिक चिक कर सबको सुना कर इसी सच को स्वीकारती रहूँगी।"[4] सूर्यबाला ने मानू को केंद्र में रखते हुए समाज में एक बलात्कार पीड़ित स्त्री के जीवन उसकी समाज में किस प्रकार उपेक्षा की जाती है उसके द्वारा किए गए समझौते आदि को इस उपन्यास में उजागर किया है।यह गुनाह जो उसके साथ हुआ है उसके लिए वह दोषी भी नहीं है फिर भी उसे इसकी सजा आजीवन भुगतनी पड़ती हैं।

### 1.2.8.3 **अग्निपंखी**:

सूर्यबाला द्वारा रचित 'अग्निपंखी' उपन्यास सन 1984 में प्रकाशित हुआ। इसके मुख्य नायक जय शंकर की जीवन यात्रा को दर्शाया गया है। जयशंकर एक गाँव में रहने वाला  लड़का है जिसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। उसकी माँ और संयुक्त परिवार के साथ गाँव में ही अपनी शिक्षा प्राप्त करता है शिक्षा प्राप्त करके उसका उद्देश्य शहर  नौकरी प्राप्त करना है वह रोजगार की तलाश में शहर की ओर पलायन करता है ।एक प्राइवेट कंपनी में उसे नौकरी मिल जाती है कभी-कभी वह गाँव अपनी माँ से मिलने जाता था तब उसकी माँ हमेशा उसके साथ चलने की जिद पकड़ लेती थी वह बता नहीं पाता था कि उसकी शहर में सच में क्या अवस्था थी हर बार वह मना कर देता था। परंतु एक बार वह अपनी माँ की जिद के आगे झुक गया और उसे शहर ले गया जहाँ जय शंकर की माँ को

शहर की जीवन शैली पसंद नहीं आती है। उसे वहाँ रहने में घुटन होती है क्योंकि उसे वह गाँव की खुली हवा गाँव के लोगों जैसा व्यवहार शहर में देखने को नहीं मिलता। जिससे वह अब ऊब चुकी है इसकी वजह से जयशंकर हमेशा अपनी माँ पर अपना गुस्सा किसी न किसी माध्यम से निकालता रहता है वह अपनी माँ के व्यवहार से खिन्न हो जाता है शहरी जीवन जीते जीते जय शंकर की माँ की दिमाग का संतुलन बिगड़ जाता है और माँ पागलों जैसी हरकतें करना शुरू कर देती हैं।

इस उपन्यास में सूर्यबाला ने अपने अंतर्मन से लड़ते हुए जय शंकर की जीवन यात्रा को  बड़े द्वंद्वात्मक स्थिति में दर्शाया है। 'अग्निपंखी 'उपन्यास में सूर्यबाला ने कई समस्याओं को एक साथ उजागर किया है जो पाठकों को अंत तक बांधे जाते हैं । इस उपन्यास के माध्यम से सूर्यबाला ने गाँव की समस्या, रोजगार की समस्या, पारिवारिक समस्या, शहरी जीवन की समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या, मध्यमवर्गीय समस्या, जीवन की समस्या को बहुत ही स्पष्ट और निडर भाव से व्यक्त किया है जो पाठकों में अनेक स्तरों पर अनेकों भाव को उत्पन्न करता है ।

### 1.2.8.4 **दीक्षांत** :

'दीक्षांत' उपन्यास सूर्यबाला का सबसे प्रसिद्ध उपन्यासों में से एक है।इसके अब तक दो संस्करण हो चुके हैं एक 1995 में और दूसरा संस्करण 2001 में प्रकाशित हुआ है। इस उपन्यास का प्रकाशन होने से पूर्व यह इसका संक्षिप्त रूप का सारांश हिंदी पत्रिका 'सारिका' में प्रकाशित हो चुका था। यह सूर्यबाला का एक सशक्त उपन्यास बनकर उभरा है सूर्यबाला ने इस उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में चल रहे भ्रष्टाचार, शोषण आदि को उपन्यास के मुख्य पात्र डॉ.विद्याभूषण की जीवन यात्रा को लेकर तय किया है।

शर्मा सर अपने ज्ञान के माध्यम से कॉलेज में पढ़ा कर पूरी निष्ठा के साथ अपना साधारण एवं सामान्य जीवन पारिवारिक जरूरतों को पूरा करके जीना चाहते थे। परंतु उनका शिक्षा का मंदिर कहे जाने वाले कॉलेज में ही अवहेलना, हताशा, अनादर के घूंट पीकर नौकरी करनी पड़ती था। इसके पीछे उनके परिवार की जिम्मेदारीयो ने उन्हें बाँधकर रखा था। घर की माली हालत ऐसे थी कि ट्यूशन पढ़ाने  भी वह साइकिल पर ही जाते थे। "एक कप चाय रोज के हिसाब से महीने भर की चीनी चाय दूध ही जोड़ा जाए तो 10 या 15 रुपए महीने भर की बचत। बाँह पर मस्के हुए ब्लाउज वाली कुंती के लिए एक नया ब्लाउज पीस, विनय के फटे स्कूल बैग की जगह एक नया सस्ता बैग या उनको कॉलेज ले जाने के लिए टिफिन के लिए एलुमिनियम डिब्बे की जगह नया या स्टील का डिब्बा"[5]

सूर्यबाला ने अस्थाई अध्यापकों की मानसिक परिस्थिति का वर्णन अत्यंत मार्मिक रूप से किया है। इसमें सूर्यबाला ने एक ईमानदार, विनम्र स्वभाव वाले कर्तव्य परायण व्यक्तित्व का कैसे करुणामय अंत होता हैं। सूर्यबाला ने उसे अत्यंत करुणांतिक ढंग से पेश किया है ।जो सामान्य मनुष्य को सोचने के लिए प्रेरित करता है लेखिका ने शर्मा द्वारा की गई आत्महत्या आज के समाज एवं शिक्षा के क्षेत्र पर एक जोरदार तमाचा है।जो इतनी दयनीय हालत हो जाती है कि मनुष्य हालातों से नहीं लड़ता बल्कि अपने आसपास के लोगों,सिस्टम से इतना परेशान हो जाता है कि अंत में अपने जीवन का अंत कर लेता है। लेखिका स्वयं लिखते हुए कहती है- "सच सच कहूँ तो बाह्य और आंतरिक दोनों ही स्तरों पर जीवन की क्रूरतम विडंबनाओं की स्वत: साक्षी होने पर भी रचनाओं में हताशा तथा यातनाओं का अतिरेक में बरबस हुआ अवसाद, करुणा और द्वंद मेरे लेखन के मूल स्वरूप अवश्य रहे हैं, किंतु इन्हीं के बीच में मैं प्राय: मानवीय संबंधों और मूल्यों की बहती प्रतिष्ठा को यथाशक्ति उजागर करने की चेष्टा करती हूँ।"[6]

सूर्यबाला ने 'दीक्षांत' उपन्यास में शिक्षा के क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, संघर्ष, राजनीति एक दूसरे के प्रति कार्यस्थल पर प्रतिस्पर्धा की भावना, एक दूसरों को नीचा दिखाना अगर हम इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य देखें तो इस उपन्यास में सूर्यबाला ने शिक्षा के क्षेत्र में  हो रहे व्यापारीकरण का पुरजोर विरोध करते हुए अपनी भावनाओं को पाठक के साथ उजागर किया है। सूर्यबाला ने शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे शोषण, संघर्षमय जीवन शैली को बड़े मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है।

### 1.2.8.5 यामिनी कथा:

सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास 'यामिनी कथा' एक लघु उपन्यास के तौर पर हम इसे संज्ञा दे सकते हैं। 'यामिनी कथा' का प्रकाशन 1991 में हुआ था। जिसमें सूर्यबाला ने पहले 'मटियाला तीतर' एवं 'मानसी' जैसी कहानियों का भी समावेश किया था। परंतु 2004 में 'यामिनी कथा' नामक उपन्यास अलग से प्रकाशित हुआ। 'यामिनी कथा' में सूर्यबाला ने यामिनी के जीवन की मानसिक संवेदनाओं को बड़े ही मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में सूर्यबाला ने आधुनिक नारी के जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म संवेदनाओं को विशेष रुप से यामिनी नामक स्त्री पात्र के द्वारा सार्थक किया है। कैसे वह अपनी जीवन यात्रा में अनेक सफल-असफल अभिव्यक्ति का संतुलन बनाए रखती है।

इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य नारी जीवन की उसके मानस की संवेदनात्मक दृष्टि से चर्चा करना है और ऐसा करने में सूर्यबाला को सफलता प्राप्त हुई है।इस उपन्यास में यामिनी एक बहुत ही संवेदनशील महिला है और उसी की संवेदनाओं को सूर्यबाला ने एक नया मोड़ दिया है। यामिनी ही इस उपन्यास के केंद्र स्थान में है। उसका वैवाहिक जीवन ऐसे व्यक्ति से जुड़ा होता है जो जहाज पर नौकरी करता है वह ज्यादातर अपना समय जहाजों पर ही गुजारता है परंतु जब भी छुट्टियों में घर आता है तब शारीरिक रूप से यामिनी को पूर्ण रूप से तृप्त करता है। घर में एक और यामिनी की सास है अच्छा पगार

कमाने वाला पति है साधन संपन्न घर है परंतु यामिनी विश्वास से इससे अलग कुछ और भी चाहती हैं।वह पूर्ण समर्पण के बदले विश्वास का प्यार पाना चाहती है प्यार जो शारीरिक रूप से ना होकर मानसिक आत्मिक हो परंतु ऐसा करने में विश्वास सफल नहीं होता है। इन दो पात्रों के बीच की असमंजस को लेखिका ने उजागर किया है। पुतुल को जन्म देते ही विश्वास के स्वभाव में थोड़ा परिवर्तन देखने को मिलता है परंतु शायद प्रकृति को यह मंजूर नहीं था ।विश्वास का बीमारी के कारण देहांत हो जाता है।विधवा यामिनी अब बिल्कुल बेसहारा हो जाती है परंतु थोड़े ही दिनों में वह दूसरी शादी कर लेती है जिसके कारण यामिनी का जीवन कई लोगों में बट जाता है।ना ही वह अपने दूसरे पति को समझ पाती है ना ही अपने पहले पति से उत्पन्न संतान को ही समझा पाती है।

ऐसे यामिनी एक ही उपन्यास में कई पात्रों को एक साथ निभाती है। इस उपन्यास के माध्यम से सूर्यबाला ने आज के आधुनिक नारी जीवन की गाथा को यामिनी कथा के माध्यम से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

### 1.2.9 सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी संग्रह:

आज मनुष्य के जीवन में कहानी का अपना एक विशेष महत्त्व है।आज कहानी मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ा एक सेतुबंध है। कहानी जितने हमारे जीवन से संबंध बनाती है उसमें से साहित्य की कोई भी विधा उतना संबंध स्थापित नहीं कर पाती। कविता बिंबों से उलझ कर वक्त से कट गई।नाटक लिखे ही कम गए हैं लिखे तो गए हैं परंतु अधिकांश उसमें ऐतिहासिक तिलिस्म में खो गए हैं या प्रदर्शन की चकाचौंध में और जो शेष रहे हैं वे पर्याप्त नहीं है। बचती है कहानी कहानी ने अपनी यात्रा बड़ी तेजी से तय की है वह तेजी आज के यांत्रिक युग की तेजी भी है और समाज की बदलती हुई मान्यताओं की भी है जीवन मूल्य जिस तेजी से बदले हैं कहानी की गतिशीलता भी उतनी ही तेज गति बढ़ी। गति के कारण ही कहानी अपने वक्त से एकात्म होकर चल सकी है।

सूर्यबाला का समकालीन महिला साहित्यकारों में एक विशेष स्थान है। सूर्यबाला की कहानियाँ हमें मनुष्य के आधुनिक जीवन की यात्रा पर ले कर जाती है। सूर्यबाला की कहानियों पर अगर हम नजर करें तो ऐसा लगता है कि यह कहानियाँ उनके अपने विचारों ,परिस्थितियों, घटनाओं का ही लेखा-जोखा है। सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से अलग-अलग विषयों,समस्याओं, परिवेशो, परिस्थितियों, पात्रों ,कथानक का एकदम सटीक एवं यथार्थ वर्णन किया है।

### 1.2.9.1 कात्यायनी संवाद:

सूर्यबाला द्वारा रचित 'कात्यायनी संवाद' कहानी संग्रह का प्रथम प्रकाशन सन् 1996 में हुआ जिसमें कुल 11 कहानियों का समावेश किया गया था। उसके नए संस्करण में कुछ 16 कहानियों का संग्रह किया गया है जिसका प्रकाशन 'ग्रंथ अकादमी'ने किया है। इस कहानी संग्रह की कहानियाँ सच एवं यथार्थ के धरातल पर आधारित है।

### 1.2.9.2 बिनरोई लड़की:

इस कहानी का मुख्य पात्र आंटी है जिनका ट्रांसफर हो जाता है। तभी एक लड़की उस आंटी के बेटे के प्रति अपना निस्वार्थ प्रेम भाव प्रकट करती है। वह लड़की आंटी के घर फूलों का गुलदस्ता लेकर पहुंच जाती है परंतु आंटी उस लड़की को अपने बेटे के प्रति उमड़ रहे उस लड़की के प्रेम एवं कोमल भाव से दूर रखना चाहती हैं। यही इस कहानी की संवेदना है और आखिर में आंटी उसी लड़की को बिना पत्ते का पत्र लिखकर अपनी उस लड़की के प्रति रही भावनाओं को व्यक्त करती है। पत्र में उस लड़की से संबंधित सारी जानकारी पाठकों के सामने प्रकट करती है।

### 1.2.9.3 बिहिशत बनाम मोजीराम की झाड़ू:

इस कहानी में सूर्यबाला ने सोसायटी के कंपाउंड में झाड़ू लगाने वाले मौजी राम को केंद्र में रखा है। मौजीराम रोज झाड़ू लगाते समय पूरी सोसाइटी के लोगों, उनकी बातों,उनके व्यवहार और उनके स्वभाव का सूक्ष्म निरीक्षण करता है। यह कहानी हमें महानगरीय जीवन शैली की परंपरा संस्कृति से अवगत कराती है।

### 1.2.9.4 कागज की नाव ए चाँदी के बाल:

इस कहानी में लेखिका अपने आपको कल्पना के धरातल पर एक राजकुमारी के रूप में परिचित करवाती है। इसमें लेखिका अपने चाँदी के बाल एवं पति पत्नी के बीच सांसारिक संघर्ष को दर्शाती है। यही नोक-झोंक पाठकों को इस कहानी के साथ जोड़े रखती है।

### 1.2.9.5 एक लॉन की जबानी:

सूर्यबाला द्वारा रचित यह कहानी एक आत्मकथात्मक के धरातल पर आधारित कहानी है । जो महानगरीय जीवनशैली को पाठकों के सामने उजागर करती है। इस कहानी के केंद्र स्थान में बड़े-बड़े घर के लोगों के बच्चों को संभालने वाली आया ,बाबा एवं बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति को दर्शाया गया है।जो बच्चों को लेकर रोज़ लॉन पर खेलने टहलने बैठने आते हैं। इस कहानी में उच्च वर्गीय जीवन स्तर तथा उनका रहन-सहन ,उनकी समस्याओं को प्रकट किया है जो भारतीय संस्कारी एवं संस्कृति से मेल नहीं खाते हैं।

### 1.2.9.6 सिखचों के आर पार:

इस कहानी के मुख्य दो पात्र हैं पति एवं पत्नी दोनों नौकरी पेशा है। जिनकी स्थिति अन्य की तुलना में अलग है।कहानी को महानगरीय परिवेश में ढाला गया है।महानगरीय जीवन शैली का सृजन लेखिका द्वारा किया गया है। महानगरों में नारी के मुक्त जीवन को भी लेखिका ने अपने कथानक के माध्यम से

व्यक्त किया है। प्रस्तुत कहानी में पति-पत्नी के घर एवं बाहरी परिस्थितियों का अंकन किया गया है।

### 1.2.10 सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ:

सूर्यबाला के इस कहानी संग्रह में 14 कहानियों का समावेश किया गया है। जिसका प्रथम संस्करण सन 2015 में हुआ, जिसका प्रकाशन प्रभात प्रकाशन ने किया है।

**हाँ, लाल पलाश के फूल..नहीं ना सकूंगी....**

इस कहानी का मुख्य पात्र अनूप है।इस कहानी में उत्तर प्रदेश के बनारस का परिवेश चित्रण किया गया है। इस परिवेश में रखाल बाबू अपने परिवार के साथ अर्थात अपनी बेटी वृंदा के साथ रहते हैं। सही मायने में देखा जाए तो यह अनूप एवं वृंदा की प्रेम कहानी ही है क्योंकि रखाल बाबू की बेटी वृंदा अनुप को मन ही मन चाहती है। अनूप कनाडा से वापस लौट कर आता है।यह कथा बंगाली परिवेश में अपना रूप लेती है।पात्रों की भाषा वेशभूषा पर बंगाली संस्कृति का प्रभाव देखा जा सकता है।

#### 1.2.10.1 कंगाल :

सूर्यबाला द्वारा रचित यह एक मध्यमवर्गीय परिवार की कहानी है। कहानी का नायक बिनै एक पढ़ा-लिखा बेरोजगार युवक है जो अपने प्रयासों से हर जगह नौकरी पाने की होड़ में लगा रहता है। किंतु हर बार उसे इसमें असफलता ही प्राप्त होती है और हमेशा की तरह और निराश होकर घर लौट जाता है।वह अपने परिवार में सहानुभूति का पात्र बन कर रह जाता है।

#### 1.2.10.2 माय नेम इश ताता:

इस कहानी की नायिका सुजाता है ताता एक सवा डेढ़ साल की बच्ची है।जिसके माँ -बाप दोनों ही नौकरी पेशा है और नौकरी के कारण वह अपनी बच्ची के लिए समय नहीं निकाल पाते। वह अपनी बेटी के लिए देखा जाए तो

आया और महंगे से महंगे खिलौने खरीद सकते हैं परंतु अपना समय प्रेम एवं दायित्व अच्छे से निभा नहीं सकते। यहाँ पर सूर्यबाला ने सवाद 1 साल की ताता का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया है अपने इसी स्वभाव के चलते शौनक और नीना परेशान है।अबोध मन दादा-दादी के साथ संबंधों की चर्चा की है। इस प्रकार लेखिका ने आधुनिक माँ-बाप एवं बच्चों की समस्या को इस कहानी के माध्यम से उजागर किया है।

### 1.2.10.3 न किन्नी न:

कहानी के मुख्य नायिका किरण है जो कॉलेज में पढ़ती है ।वह स्वभाव में ही बहुत होशियार है एक गरीब परिवार से आती है।परंतु इसी दौरान वह अपने पड़ोसी के भतीजे के प्रेम में पड़ जाती है और इसी बीच आकाश का विवाह बिजनौर वाली मौसी की लड़की रोजी से तय हो जाता है।आकाश शिक्षा के लिए जर्मनी चला जाता है उसके पीछे रोजी भी चली जाती है रोजी का तीसरे बच्चे के जन्म के समय हार्ट फेल हो जाता है। उसके पश्चात किन्नी को रोजी के बच्चे संभालने की बात मौसी कहती है परंतु अब किन्नी कॉलेज में टीचर हो गई है किन्नी हमेशा स्त्रियों की अस्मिता की बात करती है ।उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने की बात करती है।वह स्वाभिमानी स्वभाव की है और इसी कारणवश विवाह से इंकार करती है।वह मेच्योर और जिम्मेदार अनुशासन प्रिय हो गई है । परंतु बहुत सोच विचार करने के बाद वह रोजी के बच्चे संभालने के लिए मान जाती हैं इस कहानी में एक मुक्त विचारधारा वाले पात्र के रूप में किन्नी का वर्णन किया गया है।

### 1.2.10.4 तोहफा :

सूर्यबाला की यह एक पारिवारिक परिवेश में जन्म लेने वाली कहानी है। कहानी का मुख्य केंद्र छोटा बच्चा बबलू है जिसका बर्थडे होता है और बर्थडे के दिन उसके पापा मिस्टर चड्ढा को मुख्य अतिथि के रुप में आमंत्रित करते हैं

।परंतु मिस्टर चड्ढा पार्टी में लेट आते हैं और जिससे बबलू का सब्र का बांध टूट जाता है इसके कारण बबलू के पिता उसकी बाल भावनाओं से खेलते नजर आते हैं।बाल मानस का सूर्यबाला ने इस कहानी में बड़ा मार्मिक एवं संवेदनशील वर्णन किया है।

### 1.2.11 **एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम** (कहानी संग्रह ):

इस कहानी संग्रह को विद्या विहार द्वारा प्रकाशित किया गया है। जिसका संस्करण सन 2008 में हुआ है इस संग्रह में 9 कहानियों का संकलन किया गया है।

**एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम:**

इस कहानी का मुख्य पात्र मशहूर कव्वाल सारंगी वाला उस्ताद है। वह अपने जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करता है परंतु फिर भी कव्वाली में जाना नहीं छोड़ता। इस कहानी का दूसरा पात्र शब्बन है जो काफी होशियार एवं चतुर है।इस कहानी में सूर्यबाला ने पिता -पुत्री के संबंधों, उनके घर की अवस्था, दु:खद घटनाओं का मार्मिक चित्रण किया है।

#### 1.2.11.1 **निर्वासित**:

कहानी में बूढ़े माता-पिता उनका बड़ा बेटा राजन व बहू रीमा है। राजन एक बड़ा अफसर है। बाबूजी ने अपने दोनों बेटों को पढ़ा लिखा कर बहुत ही काबिल बनाया है परंतु शहर में निवास करने के कारण उनके स्वभाव और रहन-सहन संस्कृति का लोप हो गया है । उन्होंने पूर्ण रूप से पाश्चात्य संस्कृति को अपना लिया है इसी कारणवश अब इनको अपने बूढ़े माँ-बाप के रहन-सहन उनके बर्ताव से चिढ़-चिढ़ होती हैं और बेटे का ऐसा व्यवहार उनमें अपराध बोध का भाव पैदा करता है। वह ऐसे सोचते हैं कि उन्होंने ऐसा अपने जीवन में क्या? अपराध कर दिया है। सूर्यबाला ने दो पीढ़ियों की सोच विचारधारा को इस कहानी के माध्यम से उजागर किया है।

### 1.2.11.2 रेस :

यह सूर्यबाला द्वारा रचित लंबी कहानी है। जिसका नायक सुधीर है जो मील में नौकरी करता है ।उसे किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं है वह अपनी पत्नी राशि एवं बेटा सुब्रत के साथ एक खुशहाल जीवन व्यतीत करता है। हर मनुष्य की अपने जीवन में आगे बढ़ने की कामना होती है।वह एक ऐसा ऑफिसर है जो अपने काम को बड़ी गंभीरता से करता है काम करते-करते वह हार्टअटैक का मरीज बन जाता है सूर्यबाला ने इस कहानी में आधुनिक मनुष्य कैसे जीवन की सारी सुख सुविधाओं की पूर्ति करने के लिए जीवन की रेस दौड़ता है और अंत में जीवन से ही हार जाता है।

### 1.2.11.3 अविभाज्य:

कहानी के पात्र के रूप में ऋतु और रथीन और दूसरा जोशी एवं सीमा है। यह अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करते हुए अतीत की यादों में खो जाते हैं । कहानी के पात्र अपने जीवन यात्रा को बड़े अनोखे ढंग से जीते हैं और उन्हें बड़े आनंद के साथ व्यक्त करते नजर आते हैं। यह कहानी पाठकों को सत्य होते हुए भी सत्य कथा है या नहीं इस भ्रम में डाल देती है।

### 1.2.11.4 दरारें :

सूर्यबाला ने इस कहानी में मालिक एवं मजदूर यूनियन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है कहानी के मुख्य पात्र मिस्टर रायजादा है उसके एवं मजदूर यूनियन लीडर के नेता बंसल के बीच दरार पड़ गई है यह दरार उच्च वर्ग एवं मध्यम वर्ग के बीच है मिस्टर रायजादा सभी प्रकार की सुख सुविधाओं को भोगते हैं परंतु मजदूरों की समस्याओं को नजरअंदाज करते हैं इस कहानी के सभी पात्र अपनी सारी स्थितियों को अच्छे से निभाते देखे जा सकते हैं ।

### 1.2.12 थाली भर चाँद:

'थाली भर चाँद' सूर्यबाला का कहानी संग्रह है जिसमें 16 कहानियों को संग्रहीत किया गया है। जिसका प्रकाशन सतसाहित्य प्रकाशन ने किया है।इसका

संस्करण सन 20011 में हुआ था।इस कहानी संग्रह की कहानियाँ अत्यंत मार्मिक सरस एवं जीवंत कहानियाँ से जुड़ी हुई है। सामान्य जनमानस के अंतर्मन को छू जाए ऐसी कहानियों का संग्रह 'थाली भर चाँद' कहानी संग्रह में मौजूद है।

### 1.2.12.1 रहम दिल:

प्रस्तुत कहानी का नायक रहमत है जो एक मुस्लिम परिवार से हैं वह पढ़ा लिखा नहीं है। वह अपनी पत्नी सकीना बानो के साथ ट्रेन में यात्रा करता है।जब वह ट्रेन की यात्रा का टिकट खरीदता है तो उस पर उस टिकट पर 'आर अली' लिखा जाता है। लेकिन रेलवे का टीसी उसकी अज्ञानता का फायदा उठाता है। और वह टिकट जाली है यह कहकर उसे फास कर आर्थिक रूप से लूटता है। कहानी में सूर्यबाला ने देश की रेलवे व्यवस्था में चल रहे भ्रष्टाचार अज्ञानता का मार्मिक रूप से वर्णन किया है। लेखिका ने रेलवे में चल रहे भ्रष्टाचार को अपने शब्दों में आड़े हाथों लिया है।

### 1.2.12.2 रमन की चाची:

कहानी की मुख्य नायिका चाची है। जब चाची की शादी हुई थी तब चाची की उम्र महज 14 वर्ष की थी।चाची आठवीं कक्षा तक पढ़ी लिखी थी उनका पति क्लर्क था परंतु जाहिल एवं जड़ बुद्धि का था।उसकी दूसरी स्त्रियों के प्रति अच्छी सोच नहीं थी। चाची का जीवन चारों तरफ से धिक्कारो से भरा हुआ था। चाची अपने मायके जाना चाहती थी परंतु अधिक तबीयत खराब होने की वजह से चाची का दर्द झेलते-झेलते देहावसान हो जाता है। इस कहानी में लेखिका ने स्त्रियों की घर में होने वाली दुर्दशा का चित्रण किया है। कैसे किसी परिवार में महिला को इतना प्रताड़ित किया जाता है। मानव के संवेदनहीन स्वभाव का इस कहानी में बड़े मार्मिक रूप से सूर्यबाला ने वर्णन किया है।

### 1.2.12.3 **पड़ाव**:

इस कहानी के मुख्य पात्र ताऊजी एवं ताई जी है। जो अपने निःसंतान दांपत्य जीवन को व्यतीत करते हैं। दोनों की आंखें और कान अब काम नहीं करते। अधिक परंतु फिर भी वह अपने घर आने वाले मेहमानों का स्वागत बड़े ही सहज एवं सरल ढंग से करते हैं। उन्हें किसी भी चीज की कमी नहीं रहने देते बल्कि अपने पेंशन से बचे पैसों को भी शैलेंद्र एवं उसके परिवार पर लुटा देते हैं। लेखिका ने पड़ाव कहानी में इन्हीं वृद्ध दंपति के उदार स्वभाव का वर्णन यथार्थ रूप में वर्णन किया है। जो अपने बुढ़ापे में यातना को झेलते हुए भी अपने घर आए मेहमानों की आवभगत कैसे प्यार से और हर्ष उल्लास के साथ करते हैं।

### 1.2.12.4 **संताप** :

इस कहानी में अधिक सत्यता ,दरूणता यथार्थ चित्रण है। जहाँ दो परिवारों के सदस्य पिकनिक पर जाते हैं। उस पिकनिक के दौरान एक परिवार के दो सदस्यों की पहाड़ी से बहने वाली तेज धारा में बह जाने से मृत्यु हो जाती है ।एक साथ चार लोगों की मृत्यु हो जाती है और चार लोगों की अर्थियाँ एक साथ निकलती है। एक ने अपना पति खोया था और  एक ने अपने दोनों बच्चों को खो दिया था। इस तरह लेखिका ने इस मार्मिक संवेदनशील कहानी में अपने संताप को व्यक्त किया है।

### 1.2.12.5 **झील** :

इस कहानी की मुख्य नायिका श्यामली है ।यह एक पारिवारिक संबंधों को दर्शाती कहानी है।इस कहानी में श्यामली औरअनिल दोनों पति पत्नी और उनकी बेटी रूना उनका दामाद प्रदीप है। श्यामली ने एम.ए. इंग्लिश साहित्य से किया था। श्यामली का स्वभाव देखा जाए तो एकदम झील जैसा है। श्यामली समय को अधिक महत्त्व देते हुए अपना कार्य करती है।

### 1.2.13 सांझवाती (कहानी संग्रह):

सूर्यबाला द्वारा रचित सांझवती एक कहानी संग्रह जिसमें कुल 11 कहानियों का संकलन किया गया है। इस कहानी का प्रकाशन ग्रंथ अकादमी द्वारा किया गया है।इसका संस्करण 2015 में हुआ था।

#### 1.2.13.1 दिशाहीन:

इस कहानी का परिवेश गाँव है और गाँव का एक युवक है।लेखिका ने इस युवक को माध्यम बनाकर शहरी एवं गाँव के परिवेश का वर्णन किया है। कैसे एक गाँव का लड़का अपने माता-पिता के संस्कारों को बुलाकर दिशाहीन हो जाता है।इस कहानी में गाँव की भाषा शहरों की भाषा आचार विचार संस्कार और रहन-सहन का अंतर समझाया गया है। सूर्यबाला ने इस कहानी में कैसे एक लड़का अपने अस्तित्व को भुलाकर दिशाहीन हो जाता है।लड़का अपने अकेलापन दूर करने के लिए बीयर पीता है कीमती वस्त्र पहनकर फिल्म देखने जाता है। जिसके कारण उसका समय बर्बाद होता है ।लेखिका ने शहरी जीवन शैली एवं गाँव की जीवन शैली का अंतर पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

#### 1.2.13.2 सांझवाती:

सूर्यबाला  द्वारा रचित सांझवती एक छोटी कहानी है। इसका मुख्य पात्र 80 वर्ष की बेगम मेरी है। इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने पीढ़ियों के भेद, परस्पर विरोध को स्पष्ट रूप से प्रकट किया है।नई पीढ़ी का यह हाल है कि वह घर होते हुए भी बेघर है। हर परिवार में पति पत्नी की अपनी स्वतंत्रता है नई पीढ़ी अपना मार्ग भटक गई है। यह कहानी पारिवारिक कहानी है परंतु फिर भी परिवार में बिल्कुल मेल नहीं है ।आजादी के पश्चात जो घरों का विघटन हुआ उसका यथार्थ चित्रण सूर्यबाला ने अपनी इस कहानी में उजागर किया है।

### 1.2.13.3 विजेता:

इस कहानी का मुख्य पात्र सुदामा नाम का व्यक्ति है ।जिसकी एक पान की दुकान है जहाँ वह लड़का रोज उसकी पान की दुकान पर तरह-तरह के लोगों का आना जाना लगा रहता है। एक लड़का है जो सेठानी के यहाँ काम करता है।वह गरीब है उसकी शादी करने की इच्छा है वह अपनी सारी व्यथा सुदामा की दुकान पर आकर व्यतीत करता है।वह बताता है कि जैसे माहौल में वह रहता है उसका परिवेश बहुत ही खराब है। सूर्यबाला ने इस लड़के के माध्यम से उच्च वर्ग के संबंध में जो घृणा, द्वेष का भाव रखा जाता है उसे बड़े ही सहज रूप से प्रकट किया है।लड़का बस में प्रवास करते समय अपनी मर्दानगी दिखाने के लिए गुस्से में एक महिला को चांटा मार देता है।ऐसा करते हुए सूर्यबाला ने एक ही कहानी में कई समस्याओं को साथ में ही समेट लिया है।

### 1.2.13.4 सुनंदा छोकरी की डायरी:

यह कहानी लेखिका ने 'मैं' को केंद्र में रखकर लिखी है। इस कहानी का मुख्य पात्र सुनंदा है। घर में सुनंदा सबसे छोटी है परंतु उसकी इच्छा बहुत अधिक पढ़ने लिखने की है परंतु उसके घर का माहौल ऐसा है कि उसे उसमें गुजरते वक्त बहुत मानसिक दिक्कत होती है ।उसके पिता शराबी है उसकी माँ लोगों के यहाँ बर्तन माँजने का काम करती है। कहानी में सुनंदा को सूर्यबाला ने एक बाल मजदूर के रूप में दर्शाया है उसका मनोवैज्ञानिक चित्रण करते हुए उसकी व्यथा को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इस कहानी के माध्यम से समाज में दो वर्गों गरीब वर्ग एवं अमीर वर्ग के यथार्थ पहलुओं को सूर्यबाला ने अत्यंत मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया है।

### 1.2.13.5 आखरी विदा:

यह एक माँ की कहानी है। जिसका बेटा सात वर्षों के लिए विदेश गया हुआ है पर जब वह विदेश से लौटता है तो उसकी माँ अपने मातृत्व को उस पर

लुटाने के लिए तत्पर रहती है।उसको क्या खिलाना है? क्या पिलाना है? इसी विचारों को लेकर चिंता में रहती हैं।सूर्यबाला ने कहानी में भूतकाल एवं वर्तमान परिवेश को ध्यान में रखकर जीवन विषयक परिस्थितियों को पाठकों के सामने सहज एवं सरल रूप से प्रस्तुत किया है।

### 1.2.14 दिशाहीन:(कहानी संग्रह)

दिशाहीन कहानी संग्रह का प्रकाशन प्रतिभा प्रतिष्ठान ने किया है। जिसका प्रथम संस्करण 2010 में हुआ। जिसके अंतर्गत 9 कहानियों का संग्रह किया गया है। बाजार और व्यवसायिकता के सारे दबावों से मुक्त होकर एकनिष्ठ भाव से कलम चलाने वाली सूर्यबाला का 'दिशाहीन' कहानी संग्रह पाठकों के मन के अनछुए पहलुओं को छूने में कामयाब होता है।

#### 1.2.14.1 कतारबंद स्वीकृतियां:

प्रस्तुत कहानी एक सिस्टर की है जो समाज की सेवा करते हुए समाज के लोगों के दु:खों को बांटती है। सिस्टर का काम केवल समाज के लोगों के दु:ख दूर करते हुए उन्हें सांत्वना देना होता है।वह केवल सेवा भाव पर ही अपना ध्यान देती है।अपनी सारी भावनाओं को सिस्टर को बांधकर रखना पड़ता है।वह लोगों के साथ लगाव रखकर पूरी जिंदगी उनके साथ नहीं रह सकती बल्कि लोगों के दु:ख दूर हो जाने के बाद उसे  स्थान छोड़कर जाना पड़ जाता है। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य लोगों की सेवा करना है बिना किसी अटैचमेंट के।

#### 1.2.14.2 पुल टूटते हुए:

यह एक शिक्षित लड़की की कहानी है। जो शहर में रहकर नौकरी करती है उसके मां- बाप गाँव में रहते हैं।वह अपने परिवार का सारा खर्चा स्वयं उठाती है।शादी के लिए वह शौनक को मना कर देती है। यहाँ शौनक दहेज के चक्कर में शमिता से शादी कर लेता है। माया कहती है वह जैसी है वैसे ही खुश रहना चाहती है। उसके लिए अविनाश का रिश्ता आता है अविनाश को बहुत से रिश्ते

आते हैं पर वह माया का ही इंतजार करता है क्योंकि माया ही उसके बच्चों का अच्छे से ख्याल रख सकती है।

### 1.2.14.3 गुजरती हदें :

गुजरती हदे एक ऐसे युवक की कहानी है जो 10 वर्ष अमेरिका में रहकर भारत लौट आया है। वहाँ पर उसका विवाह एलिस नाम की लड़की से होता है पर पाश्चात्य संस्कृति में और भारतीय संस्कृति में जमीन आसमान का अंतर है । वहाँ की संस्कृति पति- पत्नी को समानता का अधिकार देती है। हर काम पति-पत्नी को समझदारीपूर्वक एक दूसरे की मदद करते हुए करना पड़ता है और इसके चलते ही उसका एलिस से तलाक हो जाता है। अमेरिका में यह कोई बड़ी बात नहीं है युवक सारी उम्मीदें समाप्त करके भारत लौटता है। यहाँ भारत में उसके परिवार का हर सदस्य उसकी चाकरी में लगा हुआ है। इसके बीच ही वह अमेरिका लौट जाने की फैसला कर लेता है युवक अमेरिका और भारत की संस्कृति के बीच पीस कर रह जाता है।

### 1.2.14.4 घटनाहीन:

यह एक बेरोजगार युवक की कहानी है। उसकी बेरोजगारी के चलते वह अपने परिवार का पालन पोषण अच्छे से नहीं कर पाता। उसके परिवार में उसकी पत्नी एवं उसके तीन बच्चे हैं परंतु बेरोजगारी की वजह से वह हताश एवं निराश हो गया हैपर घर नहीं जाता।क्योंकि उसकी पत्नी उसे सवाल करेगी तब वह क्या जवाब देगा इसी कश्मकश के चलते वह अपना पूरा दिन पार्क की बेंच पर ही गुजार देता है। उसके बच्चे कुपोषण का शिकार हो गए हैं पर वह चाह कर भी कुछ नहीं कर पाता और हताश जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर है।

### 1.2.15 पाँच लंबी कहानियाँ (कहानी संग्रह):

डॉक्टर सूर्यबाला की ये पाँच लंबी कहानियाँ मनोवैज्ञानिक धरातल पर मानसिक अंतर्दशा की अभिव्यंजना करती है। इस कहानी संग्रह में पाँच बड़ी

लंबी कहानियों का संग्रह किया गया है ।जिसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी ने किया है। इसका संस्करण 2011 में हुआ था।

### 1.2.15.1 भुक्कड़ की औलाद:

5 लंबी कहानियों में से एक लंबी कहानी है 'भुक्कड़ की औलाद'जो अन्य कहानियों की तुलना में थोड़ी बड़ी है ।सूर्यबाला ने इस कहानी में कई सामाजिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। आधुनिक जीवन शैली में शिक्षित बेरोजगारी का प्रमाण अधिक मात्रा में बढ़ गया है। और रोजगारी पाने के बाद लोग अपने परिवार से शारीरिक एवं मानसिक रूप से दूर हो जाते हैं। रोजगार पाने के लिए गाँव को छोड़कर आज का शिक्षित बेरोजगार शहरों की ओर पलायन करता है। इस कहानी में भजना ऐसा ही शिक्षित बेरोजगार है, जो अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए शहर में काम करता है। वह शहर में काम तो करता है परंतु उसकी इच्छा है कि वह अपने परिवार से जाकर गाँव में मिले क्योंकि काम के कारण वह 2वर्षों से अपने परिवार से नहीं मिल पाया है। सूर्यबाला ने आज की बेरोजगारी जैसी विश्वव्यापी समस्या को 'भुक्कड़ की औलाद' कहानी में बड़े ही करुणामय एवं मार्मिक ढंग से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

### 1.2.15.2 गृह प्रवेश:

' गृह प्रवेश' कहानी में वीरू शर्मा जो शहर में निवास करता है और अपनी नौकरी करके अपने परिवार के साथ रहता है परंतु वह जहाँ रहता है वहाँ उसे कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है  गाँव छोड़कर अपने परिवार के साथ शहर में रहता है किंतु वह शहर में वह जिस बस्ती में रहता है वह उस बस्ती से छुटकारा पाना चाहता है। वीरू शर्मा की बहन को जब वह गृह प्रवेश  के लिए अपने घर आमंत्रित करता है तब उसकी बहन को उसके घर तक पहुँचने में जो समस्याएँ और उसके साथ जो घटनाएँ घटित होती है उसका वर्णन लेखिका ने

इस कहानी में किया है।वीरू शर्मा के घर के आसपास का वातावरण ऐसा होता है कि उसके गृह प्रवेश का जो आनंद है वह पूरी तरह से उत्साहित होकर मना नहीं सकता क्योंकि उसे हर समय असामाजिक तत्वों का डर बना रहता है।

### 1.2.15.3 मानसी:

सूर्यबाला द्वारा रचित यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी हैं। यह "मैं"शैली में लिखित रचना है। इस कहानी का नायक 'कना' नामक नायिका से निस्वार्थ प्रेम करते हैं परंतु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ है। नायक अंत में अपने ही प्रेमिका की शादी में अपने पिता जी के कहने पर शरीक हो जाता है। लगभग 24 वर्षों के बाद नायक अचानक घर के मुंडेर पर एक लड़की को देखता है जिसके कारण नायक को अपने भूतकाल की घटनाओं के सारे प्रश्न याद आ जाते हैं। कॉलेज में प्रोफेसर "कना" को हमेशा अपने जीवन में उच्च स्थान पर देखना चाहते थे।

### 1.2.16 सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं का परिचय:

प्रख्यात रचनाकार सूर्यबाला की व्यंग्य यात्रा उनकी कथा यात्रा के समानांतर चलती आयी है। समकालीन व्यंग्य लेखन के परिदृश्य में भी वे एक व्यंग्यकार के रूप में अपने विशिष्ट अंदाज के साथ उपस्थित रहती है। धर्मयुग के बैठे ठाले स्तंभ अपने व्यंग्य लेखन की शुरुआत करने वाली सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाओं में विट, ह्यूमर और परिहास आवरण के बीच से जो विद्रोह बचता है उसमें जितनी करुणा और अवसाद है उतनी ही वेधकता और आक्रोश भी है।

"सूर्यबाला के व्यंग्य में कला और साहित्य फिल्म और संस्कृति देश सेवा और जन नेता पत्रकार और बुद्धिजीवी आदि की व्यापक परिक्रमा के आधार पर हिंदी के व्यंग लेखन एक पति मानक जायजा उपलब्ध है।"[7]-बालेंदु शेखर तिवारी

सूर्यबाला के आज तक चार व्यंग्य संकलन प्रकाशित हुए हैं।

(1) "धृतराष्ट्र टाइम्स"-सन 2001-विद्याविहार-प्रकाशन

(2) "भगवान ने कहा था"--सन 2010-ग्रंथ अकादमी प्रकाशन

(3) "देश सेवा के अखाड़े में" (प्राप्त नहीं है मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाओं में समाहित है)

(4) "मेरी प्रिय व्यंग रचनाएँ" सन 2011 पंचशील प्रकाशन

"धृतराष्ट्र टाइम्स" व्यंग्य संकलन की रचनाओं का सूक्ष्म परिचय यहाँ प्रस्तुत है।,

### 1.2.16.1 परलोक के ऊपरी माले से:

सूर्यबाला को बार-बार उनके एड्रेस चेंज करने पर सवाल किया जाता है।तब वह अपने व्यंग्य लेख के माध्यम से उनको प्रत्युत्तर देती है।इस रचना में सूर्यबाला ने महानगरीय जीवन शैली पर प्रकाश डाला है। इसके उपरांत वह राजनीतिक एवं आर्थिक,सामाजिक समस्याओं पर भी अपनी आवाज को उठाती देखी जा सकती है।

### 1.2.16.2 एक पुरस्कार यात्रा:

इस व्यंग रचना में पुरस्कार देने वाली समितियों पर सूर्यबाला ने करारा तंज कसा है। इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने पुरस्कार वितरण करने वाली संस्थाओं एवं पुरस्कार प्राप्त करने वाले साहित्यकारों को अपनी कसौटी पर उतारा है। उनके बीच होने वाले भाव तोल तालमेल को यहाँ पर दर्शाया है।

### 1.2.16.3 बड़े बाबू, बिलॉक साहब बनाम तैयारी महबूब के आने की:

इस रचना में सूर्यबाला ने हर सरकारी संस्था में होने वाले इंस्पेक्शन को मध्य नजर रखते वहाँ चलते चले आ रहे भ्रष्टाचार को अपने व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है।चाहे कोई भी चीज हो मनुष्य की फितरत रहती है कि उसे जहाँ मौका मिले वह वहाँ पर आर्थिक रूप से अपना हाथ साफ करें । इस व्यंग्य रचना की भाषा संगीतात्मक है।

### 1.2.16.4 अगली सदी के शोध पत्र:

हिंदी के प्रति हमारे हिंदुस्तान में लोगों की दृष्टि कैसी है? उसे इस व्यंग्य रचना के माध्यम से सूर्यबाला ने बहुत ही सरल रूप से प्रस्तुत किया है। हमारे देश में हिंदी के मान सम्मान में एक दिन एक हफ्ता या पकवाड़ा तय कर उसे सम्मानित किया जाता है। हिंदी की इतनी इज्जत है कि उसका भव्य सेल चौकाचौंध से जगमगाती है ।हिंदी की इतनी इज्जत है कि सारे के सारे बड़े स्कैंडल अंग्रेजी भाषा में किए जाते हैं विशेष प्रकार के स्कैंडल ही हिंदी में होते हैं। हिंदी को राष्ट्रभाषा राजभाषा का सम्मान मात्र दिया जाता है।

### 1.2.16.5 यह देश और सोनिया गांधी:

इस व्यंग्य रचना में लेखिका अपने देश की सोनिया गांधी को केंद्र में रखकर लिखा गया व्यंग्य है। "जैसे हमारे देश में राजनीति में एक सोनिया गांधी है उसी प्रकार से अन्य देशों में भी एक सोनिया गांधी होगी?"[8] ऐसा कटाक्ष सूर्यबाला ने इस व्यंग्य रचना के माध्यम से किया है। क्योंकि देश का छोटे से छोटा नेता या बड़े से बड़ा नेता सारी सलाह सूचनाएं सोनिया गांधी से ही लेने के लिए उनके निवास स्थान पर जाता है।इस व्यंग्य रचना के माध्यम से देश की राजनीतिक समस्याओं को सूर्यबाला ने बड़े ही व्यंग्यात्मक ढंग से पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है।

### 1.2.16.6 रचनात्मक आयामों से बचते -बचते:

इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने कवि, संपादक, समीक्षक और उनके बीच होने वाली चर्चा को केंद्र में रखा है।और यह लोग ऐसी चर्चा कर रहे हैं कि "साहित्य भाषा पर चला गया है"। कुल मिलाकर देखा जाए तो समाज के लोगों का साहित्य के प्रति प्रेम, लगाव, उनका दृष्टिकोण कैसा है? उसको केंद्र स्थान में रखकर यह रचना की गई है।

### 1.2.16.7 हाय! मैंने क्यों नहीं लिखा सीरियल:

सूर्यबाला को यह अफ़सोस है कि आज तक उन्होंने कोई प्रसिद्ध सीरियल क्यों नहीं लिखा? जिसके उपलक्ष में सूर्यबाला स्वयं अपनी रचना में लिखती है "दर्शकों के प्रति दुश्मनी का अभाव उपजता नहीं, उपजता हैं तो दया और सहानुभूति का,और फिर मेरे को मारने में क्या वाहवाही।"[9] सीरियल के कथानक, दृश्य , संवाद आदि को देखने के बाद हम समझ लेते हैं।

### 1.2.16.8 दो शब्द: डूब मरने की बात:

व्यंग्य लेखन में अपने आपको न्योछावर करने वाले कैसे उनको उसमें पूरी तरह डूबने से बचाया जा सकता है। इसके लिए लोग क्यों डूबते हैं? ऐसे लोगों को चुल्लू भर पानी का बंदोबस्त क्यों नहीं किया जाता। और अतःमें यही कहा जाता है कि हर वक्त मनुष्य को अंत तक कोशिश करनी चाहिए।

### 1.2.16.9 टेप रिकॉर्डर की गागर में सागर बनाम संस्कृति का बारहमासा:

इस व्यंग्य में सूर्यबाला ने बारहमासा का विवरण दिया है। हमारे देश में जो राजनीतिक भ्रष्टाचार है उस पर लेखिका ने मुक्त ह्रदय से तिरस्कार किया है।हमारे देश में छोटे से छोटा काम करने के लिए भी भ्रष्टाचार का सहारा लेना पड़ता है और इस के चक्कर में एक सामान्य आदमी कैसे फंसता चला जाता है। भ्रष्टाचार जैसी विकट समस्या पर लेखिका ने प्रकाश डाला है।

### 1.2.16.10 भारतीय रेल का फलित ज्योतिष अथवा है गाड़ी! तू बोल:

इस व्यंग्य रचना के माध्यम से सूर्यबाला ने भारत की सबसे बड़ी व्यवस्था अर्थात रेल व्यवस्था में चली आ रही अव्यवस्था को प्रकट किया है ।क्योंकि रेलवे भारत में एक ऐसा माध्यम है जो देश के विकास में चार चाँद लगाता है परंतु इसमें चली आ रही अनिश्चितता व्यवस्था की कमी सुविधाओं का अभाव एक्सीडेंट

इसको इसके स्तर से नीचा दिखाता है।संक्षेप में कहें तो सूर्यबाला ने भारतीय रेलवे की दशा दिशा का व्यंग्यात्मक वर्णन किया है।

### 1.2.16.11 मेरे आने वाली फिल्म की रूपरेखा:

सूर्यबाला ने इस व्यंग्य के माध्यम से स्त्री पुरुष की समानता पर अपनी दृष्टि डाली है।हमें पुरुष प्रधान संस्कृति का किस प्रकार एवं कैसा विरोध करना चाहिए? उसका उल्लेख लेखिका ने किया है जिसमें स्त्री को मान सम्मान देने वाले पुरुष के साथ किस प्रकार का व्यवहार करना चाहिए? और इस मुद्दे को ध्यान में रखते हुए सूर्यबाला एक फिल्म बनाना चाहती हैं।इस प्रकार अपने व्यंग्य के माध्यम से फिल्म कंपनी पर तंज कसा है।

### 1.2.16.12 बोल री कठपुतली:

इस व्यंग्य में पुरुष प्रधान समाज अपने घर की महिलाओं को माध्यम बनाकर राजनीति में सफलता प्राप्त करते हैं। महिला आरक्षण के नाम पर नेता लोग अपनी पत्नी के नाम का उपयोग कर के ही शासन करना चाहते हैं। सूर्यबाला का उद्देश्य है कि समाज में स्त्री- पुरुष समानता को अपने व्यंग्य के माध्यम से स्पष्ट करना चाहती हैं ।इस क्षेत्र में गाँव शहरों संसद तक स्त्री आरक्षण के नाम पर भी राजनेता लोग अपनी रोटियाँ सेंकते हैं।

### 1.2.16.13 सवाल जाम चक्को की दुरुस्ती का:

इस व्यंग्य में सूर्यबाला ने एक कहावत को ध्यान में रखते हुए स्पष्ट व्यंग्य किया है की हमारे समाज में यह कहा जाता है कि "हर कामयाब पुरुष के पीछे एक महिला का हाथ होता है।" परंतु लेखिका कहती है कि "हर असफल महिला के पीछे भी एक पुरुष का ही हाथ होता है।"[10] इस संसार में स्त्री पुरुष एक ही सिक्के के दो पहलू है। यहाँ पर सूर्यबाला ने स्त्री पुरुष की समानता की बात पाठकों के सामने रखी है।

### 1.2.16.14 देश सेवा के तालमेल किस्ते:

इस व्यंग्य रचना के माध्यम से लेखिका ने देश सेवा के नाम पर देश की जनता को फँसाने वाले नेताओं का असली चेहरा हमारे सामने रखा है। इस प्रकार राजनेताओं के द्वारा देश सेवा एवं समाज सेवा के नाम पर देश को और देश की भोली-भाली जनता को अपने बड़े-बड़े वादों से छला जाता है।

### 1.2.16.15 संदर्भ भारतेंदु हिंदी और बाजी का:

इस व्यंग्य के माध्यम से साहित्य जगत में भारतेंदु के नाटकों के योगदान पर लेखिका ने प्रकाश डाला है। इसके साथ ही देश में सबसे अधिक बोले जाने वाली हिंदी भाषा की क्या? दशा और दिशा है। उसको व्यंग के माध्यम से स्पष्ट किया है।

### 1.2.16.16 तुर्भेवाली बस:

हिंदी के रचनाकारों के जीवन में कभी-न-कभी तुर्भेवाली बस का सामना करना पड़ता है।थाना से चेंबूर एवं चेंबूर से थाना के बीच तुर्भेवाली बस का अभूतपूर्व अनुभव को लेखिका ने इस व्यंग रचना में अंकित किया है। तुर्भेवाली बस से गाँव,शहर,कस्बे की सवारी का उनके हालात का वर्णन किया है। आप जब तुर्भेवाली बस लेते हो तो आप एक महत्त्वपूर्ण यात्रा का आनंद प्राप्त करते है।

### 1.2.16.17 दल निर्माण की पूर्व संध्या पर:

इस व्यंग रचना में सूर्यबाला ने राजनीतिक दलों पर तंज कसा है।देश के नेताओं को देश की चिंता से ज्यादा चिंता अपने अध्यक्ष  की होती है।अध्यक्ष पद पर कौन आसीन होगा? यह प्रश्न हमेशा नेताओं के मन में रहता है।इस व्यंग्य में राजनीतिक दलों का एकमात्र काम एक दूसरे की सरकार गिराने का है।

### 1.2.16.18 खुराफती सपना:

इस खुराफती सपने में लेखिका ने देश को बचाने का संदेश दिया है। व्यंग्य करते हुए सपना देखा है । हमारे देश की रेलवे व्यवस्था पर भी लेखिका ने प्रश्नचिन्ह किया है क्योंकि देश की रेलवे की ऐसी दुर्दशा है जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है।

### 1.2.16.19 हिंदी साहित्य की पुरस्कार परंपरा:

लेखिका ने हिंदी साहित्य में पुरस्कार देने की जो प्रथा है उस पर व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया है। क्योंकि इसी प्रथा ने लेखक,संपादक, पत्रकारों के बीच प्रेम भाव को अधिक बढ़ावा दिया है और इसी प्रेम के कारण साहित्य आज समृद्ध हो रहा है।अगर साहित्य समृद्ध नहीं होता तो उसका मजाक बनाया जाता है।

### 1.2.16.20 जागो,मोहन प्यारे:

समाज में स्त्री की क्या स्थिति है उसको लेखिका ने इस व्यंग्य के माध्यम से प्रकट किया है। लेखिका अब महिलाओं को सलाह देती है कि अब महिलाओं को आधुनिक युग में अपने आप को मॉडर्न बनाना चाहिए।

### 1.2.17 भगवान ने कहा था (व्यंग्य संकलन):

इस व्यंग्य संकलन में 23 व्यंग्य रचनाओं का समावेश किया गया है। इसका प्रकाशन ग्रंथ अकादमी ने सन 2010 में किया है। सूर्यबाला के इस विविध विषय व्यंग्य संग्रह में जीवन के लगभग हर क्षेत्र की विसंगतियों, विद्रूपताओं पर करारी चोट की गई है। एक और जहाँ यह व्यंग्य भरपूर मनोरंजन करते हैं वहीं दूसरी और पाठकों को कुछ सोचने करने पर भी विवश करते हैं।

### 1.2.17.1 भगवान ने कहा था:

सूर्यबाला द्वारा रचित इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने भक्तों एवं भगवान के बीच में जो संवाद होता है उसको माध्यम बनाकर धर्म के नाम पर चल रहे बाह्य आडंबर को उजागर किया है।कुछ पुजारी भगवान को माध्यम बनाकर धर्म के नाम पर भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। इस व्यंग्य रचना में मंदिरों में पुजारियों के द्वारा जो भ्रष्टाचार चलता है उसका ही लेखिका ने इस घटना के माध्यम से तंज कसा है।

### 1.2.17.2 पुरस्कार मेले की उत्तर- आधुनिकता:

हिंदी साहित्य में जो पुरस्कार देने की होड़ लगी रहती है उस पर व्यंग्य कसा गया है।लेखिका ने पुरस्कार समितियों संस्थाओं पर अपने व्यंग्य बाण चलाये हैं। आधुनिक काल में पुरस्कार की श्रेणियों में बहुत ही बदलाव हुआ है इसी बात का उल्लेख सूर्यबाला ने अपने इस व्यंग रचना में किया है।

### 1.2.17.3 जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग

लेखिका अपने देश के लिए अपने व्यंग्य के माध्यम से कुछ नया करना चाहती है। पर यह सब कर्णधार के मन पर उसके मूड पर आधारित है। वह जानता है कि कुछ कार्य करना चाहती है परंतु उनके पास जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग नहीं है। वह कहती है कि यह तो एक दुर्भाग्य की बात है कि इतने बड़े देश के पास स्वयं का कोई टाइटल सॉन्ग भी नहीं है।

### 1.2.17.4 मेरे व्यंग्य लिखने का कारण:

सूर्यबाला ने एक प्रतिष्ठित पत्रिका को जवाब देने के लिए यह व्यंग्य रचना लिखी हैं। वह स्वयं से ही प्रश्न करती है? वह क्यों लिखती है?और अब तक इन कारणों को मैं तलाश नहीं पाई । वह साथ में संपादक महोदय पर भी करारा व्यंग्य करती नजर आती है। उन्होंने छापने वाले और पढ़ने वाले दोनों पर व्यंग्य कसा है।

### 1.2.17.5 स्त्री उन्मुक्ति के उपलक्ष में:

इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने स्त्री स्वतंत्रता की बात कही है। लेखिका का मानना है कि आरंभ से ही स्त्रियों पर अन्याय ,शोषण,अत्याचार होता रहा है।परंतु पिछले कुछ सालों से इसमें काफी हद तक कमी आई है।समाज में स्त्रियों के प्रति जागरूकता समर्थन प्राप्त हो रहा है। सूर्यबाला ने सभी क्षेत्रों में स्त्रियों के योगदान का उल्लेख किया है। आधुनिक युग में नारी की जीवन शैली में बहुत ही बड़ा परिवर्तन आया है।

### 1.2.17.6 कोटा नाम का शहर:

इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने कोटा नामक शहर का कुतूहल करते हुए उसके संबंधित बहुत सी जानकारियां पाठकों के साथ साझा की है। कोटा शहर के लोगों के साथ उनके संबंधों का उल्लेख यहाँ इस रचना में लेखिका ने किया है।कोटा शहर से जुड़ी उनकी यात्रा, यादों को व्यंग्य के माध्यम से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

### 1.2.17.7 जड़ों से जुड़ने का सवाल :

इस व्यंग रचना में सूर्यबाला ने भारत एवं विदेशी जड़ों की चर्चा की है।सूर्यबाला के अनुसार व्यक्ति कहीं भी जाए तो वह अपनी जड़ों को तोड़ नहीं सकता बल्कि अपने जड़ों से मजबूत रूप से जुड़ता है। इस व्यंग रचना में अपने देश की जड़े संस्कृति,भाषा, वेशभूषा को धीरे-धीरे भूला रहे हैं। इसी बात पर रोष प्रकट करते हुए लेखिका ने इस व्यंग रचना की प्रस्तुति की है।

### 1.2.17.8 सब्र का अंत ही व्यंग्य की शुरुआत

सूर्यबाला को व्यंग्य करने का विचार एवं प्रेरणा कहां से प्राप्त हुई इसका उल्लेख सूर्यबाला ने व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है ।व्यंग्य लेखक जन्मेजय को लिखे पत्र का ही एक सारांश लिखा हुआ है। लेखिका मानती है कि मानो सब का अंत ही व्यंग्य की शुरुआत है।

### 1.2.17.9 यात्रा एक सम्मेलन की

सूर्यबाला ने एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी साहित्य सम्मेलन ट्रीनीडाड में प्रतिभागी बन कर भाग लिया था। उसी समय का उनकी हवाई यात्रा के अनुभव का अंकन इस रचना में किया गया है। जितना सम्मान हिंदी को अन्य देशों में प्राप्त होता है उसी हिंदी का अपने ही देश में क्या दशा है?उसको व्यंग्य शैली में पाठकों के सामने सूर्यबाला ने प्रस्तुत किया है।

### 1.2.17.10 प्रभु जी तुम डॉलर हम पानी:

इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने अमेरिका एवं भारत की संस्कृति भाषा रहन-सहन वेशभूषा आदि के बीच का अंतर स्पष्ट रूप से अंकित किया है। वह कहती है कि अमेरिका में छोटा सा मिनी भारत बसा है, भारत के लोगों का अमेरिका जाने का क्या उद्देश्य है ?प्रश्न का उत्तर हमें इस रचना के माध्यम से मिल जाता है।

### 1.2.17.11 हिंदी साहित्य और पचास के हुए लेखक:

इस रचना के माध्यम से लेखकों पर करारा व्यंग्य किया है ।इस रचना के द्वारा लेखिका ने हिंदी साहित्य में चली आ रही समस्याओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है।

### 1.2.17.12 साहित्य में शालीनता का अर्थ:

इस व्यंग्य लेख के माध्यम से संपादक को की मंशा और संपादक बनने के बाद उनके द्वारा किए गए कार्यों पर व्यंग्य किया गया है। संपादक बनने के बाद उनको क्या करना चाहिए?क्योंकि पत्रिका जितनी छोटी होती है उतना संपादक का लक्षण महान होता है।लेखिका ने इस व्यंग्य में महाभारत के एक प्रसंग का उल्लेख किया है। महाभारत के द्रौपदी चीर हरण को प्रसन्न का चित्रण इस व्यंग्य में किया गया है। लेखक ने अतीत एवं वर्तमान को जोड़ने का प्रयास किया है।

### 1.2.17.13 रिटायरनामा:

इस व्यंग्य में लेखिका ने रिटायर होते हुए आदमी की मनःस्थिति पर व्यंग्य किया है।कैसे उन्होंने अपनी नौकरी के दौरान कार्य किया उनको उनके सर कर्मचारियों से कैसे प्रतिसाद प्राप्त हुआ।इस समय में उनके कार्यों में कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस रचना के माध्यम से लेखिका ने

रिटायर व्यक्ति की जीवन शैली उसकी मानसिक अवस्था पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

### 1.2.17.14 साठ के हुए लेखक:

लेखिका ने साठ के हुए लेखकों के बायोडाटा और व्यक्तित्व में क्या अंतर आता है। उसे व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त किया है। उनकी इस व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने भारत एवं विदेशी जड़ों की चर्चा की है सूर्यबाला के अनुसार व्यक्ति कहीं भी जाए तो वह अपनी  को तोड़ नहीं सकता बल्कि अपनी जड़ों से मजबूत रूप से जुड़ता है इसमें रचना में अपने देश की जड़े संस्कृति भाषा वेशभूषा को धीरे-धीरे बुला रहे हैं इसी बात पर रोष प्रकट करके लेखिका व्यंग्य करती है। साठ के होते ही उनके स्वभाव में क्या परिवर्तन आते हैं। जैसे विनम्र कम बोलना, उनमें हुआ बदला, हम उनमें देख सकते है। साठ के हुए लेखकों के द्वारा लिखी हुई पुस्तकों की कोई कमी नहीं है, बल्कि उनका साथ का होना ही साहित्य जगत के लिए एक चुनौती बन जाता है।

### 1.2.18 मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ:

इस व्यंग्य संकलन में कुल 39 रचनाओं का समावेश किया गया है। इसका प्रकाशन पंचशील प्रकाशन जयपुर द्वारा सन 2011 में किया गया है। प्रख्यात रचनाकार सूर्यबाला का व्यंग्य का सफर उनके कथा साहित्य के समांतर ही चलता रहता है और समकालीन व्यंग्य लेखन के परिदृश्य में भी वह एक व्यंग्यकार के रूप में अपना विशिष्ट अंदाज के साथ उपस्थित है। बानगी के तौर पर उनकी व्यंग्य रचना यात्रा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों की प्रस्तुत पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं - "वैसे भी हिंदी लेखक आजकल साहित्य पैदा बाद में होते हैं, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में पहले हो आते हैं।"[11]

### 1.2.18.1 काटना पागल कुत्ते का

इस व्यंग्य के माध्यम से फिल्मों के निर्माण का उद्देश्य फिल्म को आगे ले जाने के लिए उसके कथानक में क्या-क्या परिवर्तन किए जाते हैं उस पर लेखिका ने व्यंग्य के माध्यम से प्रहार किया है।

### 1.2.18.2 पापी पपीता रे:

इस व्यंग्य के माध्यम से सूर्यबाला ने देश में फैली भुखमरी की समस्या को इस व्यंग्य रचना में केंद्र स्थान पर रखते हुए व्यंग्य के द्वारा इस समस्या पर करारा तंज कसा है।

### 1.2.18.3 जीर्णोद्धार एक खस्ताहाल कहावत का:

इस व्यंग्य रचना में विज्ञापन के इस युग में भारत कैसे अपने आप को प्रदूषण मुक्त रखता है। देश की प्रदूषण की समस्या को व्यंग्य के माध्यम से उजागर किया है ।

### 1.2.18.4 अथ कलयुग गुरुदेव रासो:

इस रचना में सूर्यबाला ने गुरु शिष्य के बीच के संबंधों की परंपरा को कैसे ह्रास होता है? इस समस्या को अपने व्यंग्य के द्वारा प्रकाशित किया है।

### 1.2.18.5 सोफानामा:

इस व्यंग्य में सोफा बनाने वाले अल्लाह बख्श के माध्यम से सूर्यबाला ने अल्लाह बख्श द्वारा बहाने बनाने की आदत एवं उसके सोफा बनाने की पद्धति पर अपने अलग अंदाज में व्यंग्य कसा है।

### 1.2.18.6 आत्मकथा हिंदी फिल्म के पिताओं की....:

इस व्यंग्य रचना में हिंदी फिल्म के पिताजी एवं फिल्म के कथानक पर लेखिका ने व्यंग्य किया है। इसके साथ ही शोषण के कई प्रकारों पर प्रकाश डाला है।

### 1.2.18.7 एक अभूतपूर्व डेमोंस्ट्रेशन : खाना ईंट का:

इस व्यंग्य रचना के माध्यम से लेखिका महंगाई की समस्या पर व्यंग्य करती है,और इसको ही केंद्र स्थान में रखकर ईंट खाने वाले पात्र का निर्माण करती है।

इस व्यंग रचना में सूर्यबाला ने भारत एवं विदेशी जड़ों की चर्चा की है सूर्यबाला के अनुसार व्यक्ति कहीं भी जाए तो वह अपनी को तोड़ नहीं सकता बल्कि अपनी जड़ों से मजबूत रूप से जुड़ता है इसमें रचना में अपने देश की जड़े संस्कृति भाषा वेशभूषा को धीरे-धीरे भूला रहे हैं इसी बात पर रोष प्रकट करके लेखिका व्यंग्य करती है । इसके साथ ही देश में बढ़ रही बेरोजगारी पर भी कटाक्ष किया है। बड़े-बड़े शहरों में भुखमरी, बेरोजगारी एवं आवास की समस्या से एक आम आदमी अपना सफर कैसे करता है ?उसको लेखिका ने अपने व्यंग रचना के माध्यम से पाठकों के सामने रखा है।

### 1.2.18.7 मन चंगा तो कठौती में गंगा:

यह हमारे हिंदी साहित्य की एक प्रसिद्ध कहावत है।जो उलट बांसी किस्म के अंतर्गत आती है। मनुष्य का मन लोभी ,लंपट ,पाखंडी होता है। जिसके कारण वह रात को चैन की नींद नहीं सो पाता। यहाँ पर लेखिका ने गंगा में बढ़ रहे प्रदूषण पर भी चर्चा की है ।आजकल लोगों ने नदियों के पवित्र जल को धर्म के नाम पर पाप धोने का नाम दे दिया है, एवं अपने स्वार्थ की पूर्ति के माध्यम से नदियों के जल को इतना प्रदूषित कर दिया है कि अब वह पीने लायक भी नहीं बचा।

### 1.2.18.8 अथ कलयुग गुरुदेव रासो:

प्रस्तुत रचना में सूर्यबाला ने "काला अक्षर भैंस बराबर" गुरु शिष्य परंपरा को मार्मिक सांगोपांग विवेचन को प्रस्तुत किया है। इस व्यंग रचना में पृथ्वीराज

रासो से लेकर कबीर तक के साहित्य की चर्चा की गई है।इस रचना में बेरोजगारी की समस्या पर भी सूर्यबाला ने साथ-साथ में तंज कस दिया है।

### 1.2.18.9 चौरस्ते पर संवाद:

इस व्यंग्य रचना में लेखिका ने दो राहगीरों के बीच अपने जीवन में आने वाली समस्याओं के संबंध में चर्चा करते हुए दिखाया है।गाँव में आई बाढ़ की समस्या, सूखे की समस्या, बेरोजगारी की समस्या ,शहरों में रोजी-रोटी पाने की समस्याओं को लेकर दोनों राहगीर कैसे अपने मन के विचारों, भावों को व्यक्त करते हैं। उसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण सूर्यबाला ने इस रचना के माध्यम से व्यक्त किया है।

### 1.2.19 सूर्यबाला का बाल साहित्य:

सूर्यबाला ने बाल साहित्य में अब तक एक ही बाल पुस्तक को प्रकाशित किया है। लेकिन अब तक सूर्यबाला ने एक ही बाल साहित्य संग्रह प्रस्तुत किया है।सूर्यबाला ने अपने बाल मानसशास्त्र के ज्ञान को पाठकों के सामने संपूर्ण रूप से प्रस्तुत कर दिया है, क्योंकि बाल रचनाओं को लिखना कोई आसान कार्य नहीं है। उसके लिए आपको बाल मानस के हर स्तर को समझना पड़ता है, बच्चों के हाव-भाव,क्रियाकलापों ,उनका व्यवहार उनकी भाषा रहन-सहन, वेशभूषा आदि का सूक्ष्म अध्ययन करना पड़ता है।एक बाल साहित्यकार को इसका ज्ञान होना आवश्यक है, और इसी ज्ञान की पहचान हमें सूर्यबाला अपने बाल साहित्य में करवाया हैं । सूर्यबाला ने बाल मानस के हर स्तर को समझते हुए बाल साहित्यकार के रुप में पदार्पण करने का अद्‌भुत साहस किया है। सूर्यबाला की बाल साहित्य की रचना 'झगड़ा निपटा कर दफ्तर' में कुल 13 बाल कहानियों का संग्रह किया गया है। इसका प्रकाशन 'विद्या विहार प्रकाशन' ने किया है ।इसका प्रथम संस्करण 2012में हुआ था।

### 1.2.19.1 झगड़ा निपटा कर दफ्तर:

सूर्यबाला ने इस बाल रचना के द्वारा बच्चों के बीच होने वाले झगड़ों को कैसे बच्चे स्वयं ही अपना एक अलग ऑफिस खोल कर बाल समस्या का निराकरण करने का जिम्मा अपने आप पर उठा लेते हैं।अक्सर हम बच्चों के बीच में होने वाले छोटे-मोटे झगड़े के कभी-कभी साक्षी बन जाते हैं ,और उसका कभी-कभी उनके स्तर पर जाकर आनंद भी उठाते हैं।

### 1.2.19.2 श्यामू जिंदाबाद:

सूर्यबाला ने इस बाल रचना में बच्चों के आपस में एक दूसरे को चिड़ाने की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर बच्चों के लिए सुलभ रचना का निर्माण किया है। क्योंकि बच्चे खेलते खेलते कक्षा में ,घर में कभी कभी कहीं पर भी अपने से बड़े, छोटे या हम उम्र को हमेशा कुछ न कुछ अटपटे नाम या उनके माँ बाप के नाम से चिढ़ाते नजर आ जाते हैं। इसमें श्यामू का व्यवहार सबको पसंद आ जाता है। शाम को भी 'सिकिया' कहकर चिढ़ाया गया था, जिसके कारण उसे गुस्सा आ गया था। उसने अपनी शिक्षिका से इस बात शिकायत कर दी थी ,जिसका परिणाम माधव को इसके लिए पनिशमेंट भी मिला जाती हैं।

### 1.2.19.3 यह जो मेरे पापा है, ना:

सूर्यबाला ने बच्चों के द्वारा अपशब्दों का प्रयोग किया जाता है, उसी बात को माध्यम बनाकर एक शिक्षात्मक रचना का अंकन किया है। जिससे बच्चों को उनके माँ-बाप के जरिए यह सीख दी जा सकती है इसका उल्लेख किया है क्योंकि चिन्नू को पापा चिन्नू को बस्ती के बिगड़े हुए बच्चों के साथ खेलने जाने को कहते हैं। मगर चिन्नू जाने से मना कर देता है। इस पर पापा उसके अपनी छोटी बहन के साथ किए गए व्यवहार और अपशब्दों को याद दिलाते हैं, कि तुम भी उन्हीं लोगों की तरह व्यवहार करते हो इस तरह से बिना डांटे मारे पिताजी ने चिन्नू को अच्छी सीख दी है।

### 1.2.19.4 नाक पर चढ़ा गुस्सा:

लेखिका ने इस रचना में मनोवैज्ञानिक तरीके से बच्चों की मानसिकता को सरल एवं स्वाभाविक रूप से प्रकट किया है।बच्चों का स्वभाव होता है कि वह किसी भी व्यक्ति, घटना, परिस्थिति का तुरंत अनुकरण करने लगते हैं क्योंकि उनके आसपास घटित होने वाली घटनाओं का उनके मन पर अधिक प्रभाव पड़ता है ,क्योंकि बच्चे हमेशा बड़ों को देखकर ही जीवन का पाठ पढ़ते हैं। इसलिए बच्चों के सामने बड़ों को हमेशा अपने व्यवहार और वर्तन पर हमेशा नियंत्रण रखते हुए कार्य करना चाहिए।

### 1.2.19.5 मम्मी की खुफियागिरी:

सूर्यबाला ने इस कहानी को वास्तविक जीवन की घटना के समान ही प्रस्तुत किया है, क्योंकि बच्चे जैसे ही बड़े हो जाते हैं या बड़ी कक्षा में चले जाते हैं,उन्हें आजादी दे देनी चाहिए, और इसी आजादी का बच्चे कभी-कभी गलत फायदा भी उठा लेते हैं। इसीलिए सूर्यबाला ने बच्चों की आदतों को ध्यान में रखते हुए एक सीख माता-पिता को भी इस रचना के माध्यम से दे दी है ऐसा लगता है।

### 1.2.19.6 मेरा फ्लॉप शो :

इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला ने बच्चों में देशभक्ति की भावना निर्माण करने का सफल प्रयास किया है, क्योंकि बच्चों का स्वभाव तो भोला होता है।उनको बचपन में जो भी सिखाया या बताया जाता है ,वह भविष्य में उन चीजों को याद रखते हैं। इस रचना में बच्चों में जो लालच करने की आदत होती है उसको भी लेखिका ने उजागर किया है। बाल कहानी के माध्यम से ही सूर्यबाला ने एक सच्ची बात प्रकट की ही, कि कभी भी बच्चों का एक दूसरे से कंपैरिजन नहीं करना चाहिए।

### 1.2.19.7 लच्छू महाराज की जय:

इस कहानी में लेखिका टिन्नु के माध्यम से उसके माँ के द्वारा उसे नैतिकता, देशभक्ति का जो सबक सिखाया जाता है उसे पाठकों तक पहुँचाया है। इस रचना के माध्यम से देश एवं लोगों का क्या महत्त्व होता है,उसे समझाया हैं। लच्छू यहाँ एक गरीब घर का लड़का है ,जिसकी पढ़ाई पर भी उसकी माँ जोर देती है। यहाँ साथ-साथ में लेखिका ने मजदूर वर्ग की भी बात को प्रस्तुत किया है।

### 1.2.19.8 रानू भाट की बहू:

यहाँ पर सूर्यबाला ने रानू भाट की बहू की समझदारी चतुराई ,बुद्धिमानी को दर्शाया है। उसने रानों के सात निकम्मे , बेकार बेटों को मेहनती बनाया। घर चाहे झोपड़ी ही क्यों ना हो, उसे उसने सजाया संवारा है। यहाँ सूर्यबाला लोक कथा के माध्यम से मजदूर वर्ग की समस्या को हमारे सामने रखती है। मनुष्य को हमेशा संतोषजनक जीवन जीना चाहिए। ऐसी कहानियाँ बच्चों को अधिक पसंद आती हैं ,क्योंकि ऐसी कहानी का आधार काल्पनिक होता है ,जो सुनने वाले बच्चों में कुतुहल उत्पन्न करता है।

### 1.2.19.9 खुराफतो की वर्कशॉप:

सूर्यबाला ने बच्चों के द्वारा की जाने वाली शरारतों का हवाला दिया है। इस कहानी में तीन बहनों का उल्लेख किया गया है।तीनों बहनों में से बीच वाली अधिक शरारती होती है उसे ऐसा लगता है उससे अधिक प्रेम उसकी दोनों अन्य बहनों से किया जाता है। उसे हर बात पर डाँट मिलती है ,क्योंकि वह हमेशा खुराफातें ही करती रहती है।

### 1.2.19.10 हाय-हाय वे चुगलखोरिया मेरी:

सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से बच्चों को अपने जीवन में कभी भी चुगली ना करने की सीख दी है।और इस आदत को माँ बाप के अलावा कोई नहीं

सुधार सकता है। हर माँ बाप को अपने बच्चों को अच्छी आदतों एवं बुरी आदतों के बीच का अंतर समझाना चाहिए।सूर्यबाला ने चुगल खोरी के कई उदाहरण इस कहानी में प्रस्तुत किए हैं। उदा.जैसे दादा -दादी वाला बड़े भाई बहनों वाला ,छोटे चाचा वाला उदाहरण कहानी में अंकित किया गया है।जिस चुगली से कभी बच्चों को शाबाशी मिलती है वही चुगली कभी बच्चों को मार भी पड़वा देती है।

### 1.2.19.11 लॉलीपॉप:

यहाँ बच्चों के माध्यम से नाटक प्रस्तुत किया है । यहाँ सूर्यबाला ने बच्चों की सतर्कता बुद्धिमानी का परिचय करवाएं हमने हमेशा बच्चों की शैतानियाँ भी देखी हैं, पर कभी-कभी बच्चे भी ऐसा काम करते हैं कि उनके माँ-बाप, समाज, देश उन पर गर्व करता है।सूर्यबाला ने अजय और नरेंद्र के माध्यम से नाटक के जरिए हमें सीखनी है ,कि हम अपने बच्चों को परिस्थितियों से लड़ना सिखाएं उन्हें शिक्षा के साथ-साथ व्यावहारिक ,सामाजिक ज्ञान भी देना आवश्यक है।समाज में क्या अच्छा है? क्या बुरा है? उसका अंत में बच्चों को समझाना होता है।

### 1.2.19.12 मेहनती तोतेराम:

सूर्यबाला ने इस कहानी के माध्यम से दोस्ती की मिसाल दी गई है। यहाँ एक तोते की दोस्ती की बात नहीं का करती हैं ।हम ऐसी कहानियाँ अपनी दादी - दादा से बचपन में सुना करते थे।इस कहानी से यह सीख मिलती है कि कभी भी हार मानकर नहीं बैठना चाहिए । अन्याय का हमेशा डटकर मुकाबला करना चाहिए इस कहानी को तोता भी यही बताना चाहता हैं।अन्याय का हमेशा डटकर मुकाबला करना चाहिए ।इस कहानी को समझता है।

### 1.2.19.13 होली पर एक प्रतियोगिता:

इस कहानी में मम्मीयों के लिए प्रतियोगिता रखी जाती है। जिसका आयोजन बच्चों के द्वारा किया जाता है। किसकी मम्मी सबसे अधिक अच्छी है ,उसकी प्रतियोगिता का आयोजन होली के दिन रखा जाता है और उसका परिणाम होली के दिन ही घोषित किया जाएगा कि किसकी मम्मी ने यह प्रतियोगिता जीती है, परंतु आखिर में बच्चे भी समझदारी वाली बात कर जाते हैं।

बच्चे सारी मम्मीयों को विजेता घोषित करते हैं। बच्चे किसी को भी श्रेष्ठ नहीं मानते सबके लिए अपनी माता ही श्रेष्ठ होती है।परिणाम घोषित होने पर सभी मम्मियों को टॉफियां बांटी जाती है और सभी मम्मी मम्मी  इस प्रतियोगिता का लुफ्त उठाती है। बच्चे सारी मम्मीयों को खुश कर देते हैं।बच्चे अपने ही अंदाज में इस प्रतियोगित लुफ्त उठाते हैं। सूर्यबाला ने बच्चों में यहाँ पर नैतिक मूल्यों का रोपण किया है।

## प्रथम अध्याय
## संदर्भ सूची

---

1 यामिनी कथा (मुख्य पृष्ठ)

2 सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानियाँ (मुख्य पृष्ठ)

3 ‘मेरे संधिपत्र’ उपन्यास का अंत

4 सुबह के इंतजार तक (मुख्य पृष्ठ)

5 एक कप चाय, दीक्षांत (मुख्य पृष्ठ)

6 दीक्षांत (मुख्य पृष्ठ)

7 यामिनी कथा (मुख्य पृष्ठ)

8 धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 25

9 धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 37

10 धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 58

11 मेरी प्रिय व्यंग्य रचना, पृ. 1